

Παπυρος Ρ 45
(транскрипция текста)

Первый из Новозаветных папирусов, обнаруженных сэром Честером Бетти.

Датировка: примерно 250 г. н. э.

Содержание: Матфей 20-21,25-26; Марк 4-9,11-12;

Лука 6-7,9-14; Иоанн 4-5,10-11; Деяния 4-17

(Ματθαι 20:24-32)

24 – [ηγανακτησαν] [περι] [των] δυο αδελφων· 25 ο δε [ε] [ιη] [προσκαλεσαμενος]
[αυτους] [ειπεν] [οιδατε] [οτι] οι αρχοντες τ[ω]ν εθ[νων] [κατακυριεουσιν]
[αυτων] [και] [οι] [μεγαλοι] [κα]τεξουσιαζουσι[ν] αυτω[ν] 26 [ουχ] [ουτως]
[εσται] [εν] [υμιν] [αλλ] [ος] [εαν] [θελη] [εν] [υ]μιν μεγας γε[ν]εσθ[αι] [εσται]
[υμων] [διακονος] 27 [και] [ος] [αν] [θελη] [εν] [υμι]ν ειναι πρωτος εστα[ι] [υμων]
[δουλος] 28 [ωσπερ] [ο] [υς] [του] [ανθρωπου] [ουκ] [ηλθ]εν διακονη[θ]ηναι
[αλλα] [διακονησαι] [και] [δουναι] [την] [ψυχην] [αυτου] [λυ]τρον αντι πολλων·
29 κ[αι] [εκπορευομενων] [αυτων] [απο] [ιεριχω] [ηκολ]ουθησαν οχλοι πολ[λοι]
30 [και] [ιδου] [δυο] [τυφλοι] [καθημενοι] [παρα] [τη]ν οδον ακουσαντες [οτι] [ιη]
[παραγει] [εκραξαν] [λεγοντες] [ελεησον] [ημα]ς κε̄ ῡε̄ δαυιδ· 31 ο δε οχ[λος]
[επετιμησεν] [αυτοις] [ινα] [σιωπησωσιν] [οι] [δε] [3-4]ω εκραυγασαν [λεγοντες]
[ελεησον] [ημας] [κε̄] [υς] [δαυιδ] 32 [και] [στας] [ο] [ι]η̄ εφ[ω]νη[σεν] [αυτους]
[και] [ειπεν] [τι] [θελετε] –

(Ματθαι 21:13-19)

13 – [γεγραπται] [ο] [οικος] [μου] [οικος] προσευχης κληθησεται [υμεις] [δε]
[αυτον] [ποιειτε] [σπηλαιον] [λη]στων· 14 και προ[σηλθον] [αυτωι] [τυφλοι] [και]
[χωλοι] [εν] [τωι] [ιερωι] [και] εθεραπευσεν [αυτους] 15 [ιδοντες] [δε] [οι]
[αρχιερις] [και] [οι] [γραμματεις] [τα] θαυμασι[α] α εποι[ησεν] [και] [τους]
[παιδας] [τους] [κραζοντας] [εν] [τωι] ιερωι και λεγοντα[ς] [ωσαννα] [τωι] [υιωι]
[δαυιδ] [ηγανακτησαν] 16 και ειπον αυτωι· α[κουεις] [τι] [ουτοι] [λεγουσιν] [ο]
[δε] [ιη] [λεγει] [αυτοις] ναι· ουδεποτε αν[εγνωτε] [οτι] [εκ] [στοματος] [νηπιων]
[και] [θηλαζο]ντων κατηρτισω αι[νον] 17 [και] [καταλιπων] [αυτους] [εξηλθεν]
[εξω] [της] πολεως εις βηθαν[ια0-1] [και] [ηυλισθη] [εκει] 18 [πρωι] [δε]
[επαναγω]ν εις την πολιν επ[εινασεν] 19 [και] [ιδων] [συκην] [μιαν] [επι] [της]
[οδ]ου ηλθεν· επ[αυτην] [και] [ουδεν] [ευρεν] [εν] [αυτηι] [ει] [μη] [φυλλα]
[μονο]ν· και λεγει α[υτηι] [μηκετι] [εκ] [σου] [καρπος] –

(Ματθ. 25:40-46)

40 – [μου] [των] [ελαχιστων] [εμοι] [εποιησατε] 41 [τοτε] [ερει] και τοις εξ
ευωνυμ[ων] [πορευεσθε] [απ] [εμου] [οι] [κατηρα]μενο[ι] [εις] [το] [πυρ] [το]
[αι]ωνιον το ητοιμασμ[ενον] [τωι] [διαβολωι] [και] [τοι]ς αγγ[ελοις] [αυτου] 42
[ε]πεινασα γαρ και □ εδωκατ[ε] [μοι] [φαγειν] [και] εδιψησα και ουκ [εποτισατε]
με 43 ξενος ημην και [ου] [συνηγαγετε] [με] και γυμνος ημ[ην] [και] [ου]
[π]εριεβαλετε με ασθεν[ης] [και] [εν] [φυλακηι] και ουκ επεσκεψα[σθε] [με] 44
[τ]οτε αποκριθησονται κα[ι] [αυτοι] [λεγοντε]ς κε̄ ποτε σε ειδομ[εν] [πεινω]ντα η
διψωντα η ξεν[ον] [η] [γυμνον] [η] [α]σθενη και εν φυλ[ακηι] [και] [ο]υ
δηκονησαμεν σο[ι] 45 [τοτε] [αποκριθη]σεται αυτοις λεγ[ων] [αμην] λεγω υμιν εφ
οσον ου[κ] [εποιησατε] [ενι] τουτων των ελ[αχιστων] [ο]υδε εμοι εποιησατε 46
[και] [απελευσον]ται ουτοι εις κ[ολασιν] [αιω]νιον οι δε δικαιοι ε[ις] [ζωην]
[αιωνιον]

(Ματθ. 26:1-10)

1 και εγενετο [οτε] [ετελεσεν] [το]υς λογους τουτους ο ι[η] [παντας] [ειπεν] [τ]οις
μαθητα[ις] [αυτου] 2 [οιδατε] οτι μετα δυο ημερα[ς] [το] [πασχα] [γινεται] [και]
[ο] ῡς του ανθρωπου [πα]ραδιδοται εις το σ̄ρνα[ι] 3 [τοτε] [συνηχθησαν] [οι]
[αρχ]ιερεις [και] [οι] [πρεσβυτ]εροι του λαου εις τη[ν] [αυλην] [του] [αρχιερω]ς
[το]υ λεγομ[ενου] [καια]φα 4 και συνεβουλευσ[αντο] [ινα] [τον] [ιη] [δο]λω
κ[ρ]ατησωσιν [και] [απο]κτεινωσι[ν] 5 [ελεγον] [δε] [μη] [εν] [τηι] [εορτ]ηι ιν[α]
[μη] [θορυβο]ς [γενητα]ι εν τωι λαωι· 6 τωι [δε] [ιη] [γενομενωι] εν βη[θανια] [εν]
[οικια] [σιμων] του λεγομεν[ου] [λεπρου] 7 [προσηλ]θεν αυτωι [γυνη]
[αλαβασ]τρον εχουσα μυρου [βαρυτιμου] [και] [κ]ατεχ[εεν] [επι] [την] [κεφα]λην
αυτου ανακε[ιμενου] 8 [ιδοντ]εσ δε [οι] [μαθηται] [ηγανακτ]ησαν λεγοντες [εις]
[τι] [η] [απωλεια] [αυτη] 9 εδυ[νατο] [γαρ] [τουτο] [πραθη]ναι πολλου και
[δοθη]ναι [πτωχοις] 10 [γ]γους [δε] [ο] [ιη] [ειπεν] [αυτοις] [τι] κοπους π[αρ]εχετε
[τηι] [γυναικι] [εργον] [γαρ] κα[λον] [ηργασατο] [εις] [εμε]

(Μαρκ. 4:33-41)

33 – [αυτοις] [τον] [λογον] [καθω]ς [1]δυνα[ντο] [ακουειν] 34 [χωρις] [δε]
[παραβολη]ς [ουκ] [ελαλει] [αυτοις] [καθ] [ιδ]ιαν δε τ[οις] [μαθηταις] [επελυεν]
[παντα] 35 [και] [λεγει] [αυτοις] [εν] [εκ]εινη [τηι] [ημερα] [οψιας] [γενομενης]
[διελθω]μεν [εις] [το] [περαν] 36 [κ]α[ι] αφιουσι[ν] [τον] [οχλον] [και]
[παραλαμ]βανουσιν [αυτον] [ω]ς [ην] [εν] [τ]ωι πλοιωι κα[ι] [αλλα] [πλοια] [ην]
[μετ] [αυτου] 37 [και] [γινεται] [λαιλαψ] μεγαλη αν[εμου] [και] [τα] [κυματα]
[επεβαλλεν] [εις] [το] [πλοιο]ν [ω]στ[ε] ηδη γε[μιζεσθαι] [το] [πλοιο]ν 38 [και]
[αυτο]ς [ην] [εν] [τη] [πρυμνη] [επι] [το] [προσκεφ]αλαιοι καθε[υδων] [και]

[εγειρουσιν] [αυτον] [και] [λεγουσιν] [αυτωι] διδασκαλε ο[υ] [μελει] [σοι] [οτι]
[απολλυμεθα] 39 [και] [διεγερθεις] [επε]τειμησεν [τωι] [ανεμωι] [και] [ειπεν] [τηι]
[θαλασση] [σιωπα] [πεφιμωσο] [και] [εκο]πασεν ο α[ν]εμ[ος] [και] [εγενετο]
[γαληνη] [μεγαλη] 40 [και] [ειπεν] [α]υτοις τι ου[τως] [δειλοι] [εστε] [ουπω]
[εχετε] [πιστιν] 41 [και] [εφοβηθησαν] [φοβο]ν μεγαν [και] [ελεγον] [προς]
[αλληλους] [τις] [αρα] [ουτος] [εστιν] [οτι] [και] [ο] [ανεμος] κα[ι] [η] [θαλασσα]
[υπακουει] [αυτωι]

(Μαρκ 5:1-22)

1 [και] [ηλθον] [εις] [το] [περαν] [της] [θαλα]σση[ς] [εις] [την] [χωραν] [των]
[γερασηνων] 2 [και] [εξελθοντος] [αυτου] [ε]κ [του] [πλοιου] [ευθυς] [υπηνητησεν]
[αυτωι] –

15 – [λεγιωνα] [και] [εφοβηθησαν] 16 [κ]αι διη[γησαντο] [αυτοις] [οι] [ιδοντες]
[πως] [εγενετο] [τωι] [δαιμονιζομε]νωι και [περι] [των] [χοιρων] 17 [και]
[ηρξαντο] [παρακαλειν] [αυτον] [απ]ελθειν α[πο] [των] [οριων] [αυτων] 18 [και]
[εμβαινοντος] [αυτου] [εις] [το] [πλοιο]ν παρεκαλ[ει] [αυτον] [ο] [δαιμονισθεις]
[ινα] [μετ] [αυτου] [η] 19 [και] [ουκ] [αφηκε]ν αυτον αλλ[α] [λεγει] [αυτωι]
[υπαγε] [εις] [τον] [οικον] [σου] [προς] [τους] [σους] και διαγγειλ[ον] [αυτοις]
[οσα] [ο] [κς̄] [σοι] [πεποιηκεν] [και] [ηλεησεν] [σε] 20 [κα]ι απηλθεν [και]
[ηρξατο] [κηρυσσειν] [εν] [τηι] [δεκαπολει] [οσα] [εποι]ησεν αυτωι ο ι[η] [και]
[παντες] [εθαυμαζον] 21 [και] [διαπερασαντος] [του] ιη̄ παλιν συν[ηχθη] [οχλος]
[πολυς] [επ] [αυτον] [και] [ην] [παρα] [την] [θα]λασσαν 22 και ιδου [ερχεται] [εις]
[των] [αρχισυναγωγων] [ονοματι] [ια1-2]ρος και ιδων αυ[τον] [πιπτει] [προς]
[τους] [ποδας] [αυτου]

(Μαρκ 5:23-43)

23 [και] [παρακαλει] αυτον πολλα λεγ[ων] [οτι] [το] [θυγατριον] [μου] [εσχατως]
[εχει] [ινα] [ελθω]ν επιθη[ς] αυτω[ι] [τας] [χειρας] [ινα] [σωθη] [και] [ζηση] 24
[και] [απηλθεν] [μετ] [αυτου] [και] ηκολουθ[ει] [αυτωι] [οχλος] [πολυς] [και]
[συνεθλιβον] [αυτον] 25 [και] [γυνη] [ουσ]α εν [ρυσει] [αιματος] [δωδεκα] [ετη]
26 [και] [πολλα] [παθουσα] [υπο] [πολλων] [ι]ατρω[ν] [και] [δαπανησασα] [τα]
[παρ] [αυτης] [παντα] [και] [μηδεν] [ωφεληθει]σα [αλλα] [μαλλον] [εις] [το]
[χειρον] –

38 – [αρχισυναγωγου] [και] [θεωρει] [θορυβον] [και] κλ[αιοντας] [και]
[αλαλαζοντας] [πολλα] 39 [και] [εισελθων] [λεγει] [αυτοις] [τι] [θο]ρυβεισ[θε]
[και] [κλαιετε] [το] [παιδιον] [ουκ] [απεθανεν] [αλλα] [καθευδει] 40 και
κα[τεγελων] [αυτου] [ειδοτες] [οτι] [απεθανεν] [αυτος] [δε] [εκβαλων] [παν]τας

παραλ[αμβανει] [τον] [πῶ] [του] [παιδιου] [και] [την] [μῶ] [και] [τους] [μετ]
αυτου και [εισπορευεται] [οπου] [ην] [το] [παιδιον] [11-12] [] 41 [και] κρατησας
τη[ς] [χειρος] [του] [παιδιου] [λεγει] [αυτη] [ταλιθα] [κουμ] [ο] [εστιν]
μεθερμηγευο[μενον] [το] [κορασιον] [σοι] [λεγω] [εγειρε] 42 [και] [ευθυς]
[α]γγελστη το κορασι[ον] [και] [περιεπατει] [ην] [γαρ] [ετων] [δωδεκα] [και]
[εξε]στησαν εκστασει [μεγαλη] 43 [και] [διεστει] [λατο] [αυτοις] [πολλα] [ινα]
μηδεις γνοι τ[ουτο] [και] [ειπεν] [δοθηναι] [αυτη] [φαγειν]

(Μαρκ 6:1-20)

1 [και] [ε]ξηλθεν εκειθ[εν] [και] [ερχεται] [εις] [την] [πατριδα] [αυτου] [και]
[α]κολουθουσιν αυ[τωι] [οι] [μαθηται] [αυτου] 2 [και] [γενομενου] [σαββ]ατου
ηρξατο εν τη[ι] [συναγωγη] [διδασκειν] [και] [πολλοι] [ακουσ]υτες
εξεπλησσο[ν] [το] [16-18] [λεγοντες] [ποθεν] [του] τωι ταυτα και τ[ις] [η] [σοφια] [η]
[δοθεισα] [τουτωι] [και] [αι] [δυναμεις] [τοιαν]ται δι[α] [των] [χειρων] [αυτου]
[γινομεναι] 3 [ουχ] [ουτος] [εστιν] [του] [τεκτον]ος ο υς [της] [μαριας] [και]
[αδελφος] [ιακωβου] [και] [ιωσητος] [και] [ι]ουδ[α] [και] [σιμωνος] [και] [ουκ]
[εισιν] [αι] [αδελφαι] [αυτου] [ωδε] [προς] [ημας] κ[αι] [εσκανδαλιζοντο] [εν]
[αυτωι] 4 [και] –

15 – [ηλιας] [εστιν] [αλλοι] [δε] [ε]λ[εγον] [οτι] [προφητης] [ως] [εις] [των]
[προφητων] 16 [ακουσας] [δε] [ο] [ηρωδης] [ει]πεν οτι [ον] [εγω] [απεκεφαλισα]
[ιωαννην] [ουτος] [ηγερθη] 17 [αυτος] [γαρ] [ο] ηρωδ[ης] [αποστειλας]
[εκρατησεν] [τον] [ιωαννην] [και] [εδησεν] αυτον εν [φυλακη] [δια] [ηρωδιαδα]
[την] [φιλιππου] [του] [αδελφου] αυτου γυν[αικα] [οτι] [αυτην] [εγαμησεν] 18
[ελεγεν] [γαρ] [ο] [ιωαννης] [τωι] ηρωδη οτι ο[υκ] [εξεστιν] [σοι] [εχειν] [την]
[γυναικα] [του] [αδελφου] [σου] 19 ηρωδιας δε ενε[ιχεν] [αυτωι] [και] [ηθελεν]
[αυτον] [αποκτειναι] [και] ουκ ηδυνατο 20 ο γαρ [ηρωδης] [εφοβειτο] [τον]
[ιωαννην] [ειδ]ως αυτον ανδρα δ[ικαιον] [και] [αγιον] [και] [συνετηρει] [αυτον]
[και] [ακουσας] [αυτου] [πολλα] [4]ει· και ηδεως αυτου [ηκουεν]

(Μαρκ 6:21-40)

21 [και] [γενομενης] [ημερας] [ευκαιρου] [οτ]ε ηρωδης εν τω[ις] [γενεσιος]
[αυτου] [δειπνον] [εποιησεν] [τοις] [μεγισ]τασιν αυτου και τ[οις] [χιλιαρχοις] [και]
[τοις] [πρωτοις] 22 [και] [εισ]ελθουσης της θ[υγατρος] [αυτου] [ηρωδιαδος] [και]
[ορχησαμενη]ς και αρεσασης τ[ωι] [ηρωδη] [και] [τοις] [συνανακειμενοις] [ειπε]ν
ο ηρωδης τωι κ[ορασιωι] [αιτησον] [με] [ο] [εαν] [θελης] [και] [δωσω] [σοι] 23
[και] [ωμοσεν] πολλα ο τι εαν μ[ε] [αιτησης] [δωσω] [σοι] [εως] [ημισους] [της]
[βασιλειας] [μου] 24 [κα]ι εξελ[θουσα] [ειπεν] [τη] [μητρι] [αυτης] [τι]
[αιτησωμαι] [η] [δε] [ειπεν] [αιτ]ησαι [την] [κεφαλην] [ιωαννου] [του]

[βαπτίζοντος] 25 [και] [εισελθουσα] [ε]υθυς [μετα] [σπουδης] [προς] [τον]
[βασιλευα] [ητησατο] [λεγουσα] [θελω] [ινα] [εξ]αυτ[ης] [δωσ] [μοι] [επι] [πινακι]

36 – [αγορασωσιν] [αυτ]οις τι φαγωσιν 37 ο δε αποκρι[θ]εις ει[πεν] [αυτοις] [δοτε]
[υμεις] [φαγει]ν αυτοις· και λεγουσιν αυτωι απελθοντες [αγορασωμεν] [δηναριων]
[διακοσ]ιων αρτους και δωσομεν αυτοις φαγειν [10-12] [5-7] 38 [ο] [δε] λεγει
αυτοις ποσους αρτους εχετε υπα[γετε] [ιδετε] [και] [γνοντο]ς λεγουσιν πεντε και
δυο ιχθυας 39 και επετα[ξεν] [αυτοις] [ανακλιν]αι συμποσια συμποσια επι χλωρωι
χορτωι 40 κα[ι] [ανεπεσαν] [πρασι]αι πρασιαι

(Μαρκ 6:41-50)

41 και λαβων τους αρτους και τους ιχθ[υας] [αναβλεψας] [ει]ς τον ουρανον
ηυλογησεν και κατεκλασεν του[ς] [αρτους] [και] [εδιδ]ου τοις μαθηταις αυτου ινα
παραθωσιν αυτοις [και] [τους] [δυο] [ιχθυας] [εμ]ερισεν πασιν 42 και εφαγον
παντες και εχορτασ[θησαν] 43 [και] [ηραν] [κ]λασματα δωδεκα κοφινων
πληρωματα κα[ι] [απο] [των] [ιχθυων] 44 [κα]ι ησαν οι φαγοντες πεντακιςχειλιοι
ανδ[ρες] 45 [και] [ευθυς] [ηναγκ]ασε τους μαθητας αυτου εμβηναι εις [το]
[πλοιο]ν [και] [προ] [αγειν] [πρ]ος βηθσαιδαν εως αυτος απολυση [τον] [οχλον] 46
[και] [αποταξαμενο]ς αυτοις απηλθεν εις το ορος προσ[ευξ]ασ[θαι] 47 [και]
[οψιας] [γενομε]νης ην παλαι το πλο[ι]ον [ε]ν μεσω [της] θαλ[ασσης] [και] [αυτος]
[μον]ος επι της γης 48 και ειδεν αυτους βασα[ν]ιζο[μενους] [εν] [τωι] [ελαυν]ειν
ην γαρ ο ανεμος εναντιος αυτ[οις] [σφ]οδ[ρα] [και] [περι] [τεταρτην] φυλακην
ερχεται προ[ς] [αυτους] [πε]ριπα[των] [επι] [της] [θαλασσης] [και] [ηλ]θεν
παρελθειν 49 ο[ι] δ[ε] [ιδοντες] [αυτον] [επι] [της] [θαλασσης] [περιπατου]ντα
φαντασμα εδο[ξαν] [ειναι] [και] [ανεκραξαν] 50 [παντες] [γαρ] [αυτον] [ειδ]ον και
εταραχ[θησαν] [ο] [δε] [ευθυς] [ελαλησεν] [μετ] [αυτων] [και] [λεγει] [αυ]τοις
θαρσειτ[ε] [εγω] [ειμι] [μη] [φοβεισθε]

(Μαρκ 6:51)

51 [και] [ανεβη] –

(Μαρκ 7:3-12)

3 – [κρατουντες] [την] παραδοσιν των πρεσβυτερ[ων] 4 [και] [απ] [αγορας] [εαν]
[μη] [β]α[π]τισωνται ουκ εσθιουσιν και αλλα π[ο]λλα [εστιν] [4ελα]βον κρατειν
βαπτισμους ποτηριων· και [ξεστων] [και] [χαλκιων] 5 [και] [επερωτω]σιν αυτον
οι φαρεισαιοι και οι γραμμ[ατεις] [λεγοντες] [δια] [τι] [οι] μαθηται σου ου
περιπατουσιν κατα την π[α]ραδοσιν [των] [πρε]σβυτερων αλλα κοιναις χερσιν και
ανιπτο[ις] [εσθιουσιν] [τον] [α]ρτον 6 ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις οτι καλ[ως]
[επροφητευσεν] περι υμων ησαιας των υποκριτων ως γε[γραπται] [ουτος] [ο]

[λαο]ς τοις χειλεσιν με τειμα η δε καρδια αυτ[2] [πορρω] [απεχει] [α]π εμου 7
ματην δε σεβονται με διδασκον[τες] [διδασκαλι]ας και ενταλματα ανθρωπων 8
αφεντες τη[ν] [εντολην] [του] [θυ] [κρατε]ιτε την εντολην των ανθρωπων· 9 κα[ι]
[ελεγεν] [αυτοις] [καλω]ς αθετειτε την εντολην του θῡ ινα την π[αραδοσιν] [υμων]
[στησητε] 10 [μωση]ς γαρ ειπεν τιμα τον π̄ρα σου κα[ι] [την] [μητερα] [σου] [και]
[ο] [κα]κολ[ογ]ων π̄ρα η μητερα θανατωι τελευτατ[ω] 11 [υμεις] [δε] [λεγετε] εαν
[ειπη] ανθρω[πος] [τω]ι π̄ρι η τη μητρι κορ[βαν] [ο] [εστιν] [δωρον] [ο] εα[ν] [εξ]
[εμου] [ω]φε[λη]θης 12 και ουκετι αφειε[τε] [αυτον] [ουδεν] [ποι]ησ[αι] [τω]ι π̄ρι
[η] [τη] [μητρ]ι

(Μαρκ 7:13-31)

13 ακυρουντες τον λογ[ον] [του] [θυ] [τη] [παραδοσει] [υμων] [η] [παρεδωκα]ε
και παρομοια πο[λλα] [ποιειτε] 14 [και] [προσκαλεσαμενος] [παντ]α τον οχλον
ελεγεν α[υτοις] [ακου] [σατε] [μου] [παντες] [και] [συνετε] 15 [ουδ]εν εστιν εξω
του [ανθρωπου] [εισπορευομενον] [εις] [αυτον] [ο] [δυναται] [α]υ[το]ν κοιν[ωσαι]
[αλλα] [τα] [εκ] [του] [ανθρωπου] [εκπορευομενα] [εστιν] [τα] [κ]οιν[ουντα] [τον]
[ανθρωπον] –

25 – [γυνη] [περι] [αυτου] [ης] ειχεν θυγατρ[ι]ον εν π̄νι ακαθ[αρτοι] [ελθουσα]
[προσεπεσεν] [αυτ]ωι 26 η δε γυνη ην ελληνις συροφοινικ[ισσα] [τω]ι [γενει] [και]
[ηρωτα] [αυτ]ον ινα το δαιμονιον εκβαλη της θυγατρ[ος] [αυτης] 27 [και] [ελεγεν]
[α]υτηι αφες πρωτον χορτασθηναι τα τεκνα ου [γαρ] [εστιν] [καλον] [λαβε]ιν τον
αρτον των τεκνων και τοις κυναριοι[ς] [βαλειν] 28 [η] [δε] [απεκριθ]η λεγουσα κε̄
και τα κυναρια τα υποκατω τη[ς] [τραπεζης] [εσθιουσιν] [α]πο των ψιχιων των
παιδιων· 29 και ειπεν αυ[τη] [δια] [τουτον] [τον] [λογον] υπαγε εξεληλυθεν το
δαιμονιον εκ της θ[υγατρος] [σου] 30 [και] [απελ]θουσα εις τον οικον ευρεν το
δαιμονιον εξ[εληλυθος] [και] [την] θυγατερα βεβλημενην επι της κλεινης 31 κ[αι]
[παλιν] [εξελθω]ν εκ των οριων τυρου και σειδωνος ηλθε[ν] [εις] [την]
[θαλασσα]ν της γαλιλαιας ανα μεσον των οριων ε[ις] [την] [δεκαπολιν]

(Μαρκ 7:32-37)

32 [κ]αι φερουσιν αυτωι κωφον μογιλαλον κα[ι] [παρακαλουσιν] [αυτο]ν ινα επιθη
αυτωι την χειρα 33 και απολαβομ[ενος] [αυτον] [απο] [του] [ο]χλου καθ ιδιαν
ενεβαλεν τους δακτυλους α[υτου] [εις] [τα] [ωτα] [αυτο]ν π[υ]σας και ηψατο της
γλωσσης αυ[το]ν 34 και α[ναβλεψας] [εις] τον ουρανον εστεναξεν και λεγει
αυ[τω]ι εφ[φαθα] [ο] [εστιν] [διανοι]χθητι 35 και ευθεως διηνο[ι]χθησαν [α]υτου
α[ι] [ακοαι] [και] [ο] [δεσμος] [ε]λυθη της γλωσσης αυ[του] και ελαλε[ι] ορθως 36
[και] [διεστειλατο] [αυτοις] ινα μηδενι λεγω[σιν] [οσον] δε α[υτοις] διε[στ]3-4το
[αυτοι] [μαλλον] [περισ]σοτερον εκηρυσ[σον] 37 [και] [υπερπερισσως]

[εξεπλησσοντο] [λεγοντες] [καλως] [πα]ντα [πεποιηκεν] [και] [τους] [κωφους]
[ποιει] [ακουειν] [και] [αλαλους] [λαλειν]

(Μαρκ 8:1-18)

1 [εν] [ε]κειν[αις] [ταις] [ημεραις] [παλιν] –

10 – [9-11] [μαγε]δαν 11 και εξη[λ]θον οι φαρεισαι[οι] [και] [ηρξαντο] [συζητειν]
αυτω σημειον εκ του ουρανου παρ [αυτου] [ζητουντες] [πειρα]ζοντες αυτον· 12
και αναστεναξας τωι [πν̄ι] [αυτου] [λεγει] [τι] [η] [γενεα] [αυτ]η σημειον αιτει
αμην ει δοθησεται [τηι] [γενεα] [ταυτηι] [σημειο]ν 13 και αφεις αυτους παλιν
εμβας εις το πλοιο[ν] [απηλθεν] [εις] [το] [πε]ραν· 14 και επελαθοντο οι μαθηται
αυτου λα[βειν] [αρτους] [ενα] [μον]ον αρτον εχοντες μεθ εαυτων εν τωι π[λοιοι]ω
15 [και] [δι] [εστελλε]το αυτοις λεγων ορατε και βλεπετε απο της [ζυμης] [των]
[φαρισαι]ων και της ζυμης των ηρωδιανων· 16 οι δε [διελογιζοντο] προς
αλληλους οτι αρτους ουκ εχουσιν· 17 και γν[ους] [ο] [ιη̄] [λε] [γει] [αυτοις] τι
διαλογιζεσθε εν εαυτοις ολιγοπιστοι [οτι] [αρτους] [ουκ] [εχετε] [ου]πω νοειτε
ουδε συνειετε πεπωρωμεν[ην] [εχετε] [την] [καρ]διαν υμων 18 οφθαλμους εχοντες
ου βλε[πετε] [και] [ωτα] [εχοντες] ουκ ακουετε ουπω ν[ο]ειτε ουδε μνημον[ευετε]

(Μαρκ 8:19-35)

19 [οτε] [τους] [πεντε] αρτους εκλασα εις πεντακισχειλιους π[οσους] [κοφι] [νους]
[πληρει]ς κλασμάτων ηρατε λεγουσιν αυτω ιβ̄· 20 ο[τε] [2-3] [τους] [επτα]
[αρτο]υς εις τετρακισχειλιους ποσων σπυριδων τ[ων] [κλασματος] [π]ληρωματα
ηρατε· οι δε ειπον επτα· 21 και λεγει α[υτοις] [πως] [ουπω] [συνει]ετε· 22 και
ερχονται εις β[η]θσαιδαν και φερουσ[ιν] [αυτωι] [τυφλον] [και] π[αρακαλουσιν]
[αυτο]ν ινα αυτου αψηται 23 [και] [επιλαβομενος] [της] χει[ι]ρος αυτου
[εξηνεγ]κεν αυτον εξω της [κωμης] [και] [πτυσας] εις τα [ομματα] [αυτου] [και]
επιθεις τας χει[ι]ρας [αυτωι] [επηρωτα] αυ[τον] [ει] [τι] [βλεπεις] 24 [και]
[αναβλεψας] ειπ[εν] [βλεπω] [τους] [ανθρωπους] [οτι] [ως] [δενδρα] [ορω]
[περι]πατ[ουν]τας 25 ειτα π[αλιν] [επεθη] [κεν] [τας] [χειρας] [επι] [τους]
[οφθαλμους] [αυ]τ[ο]υ και [διεβλεψεν] [και] [απεκατεστη] [και] [ενεβλεπεν]
[τη]λαυγως [απαντα] 26 [και] [απεσ]τε[ιλεν] [αυτον] [εις] [οικον] –

34 – [προσκαλεσαμενος] [τον] [ο]χ[λον] [συν] [τοις] [μαθηταις] [αυτου] [ειπεν]
[αυτοις] [ει] [τις] [θελει] οπισω μ[ο]υ ακολουθειν [απαρνησασθω] [εαυτον] [και]
[αρατω] [τον] [σταυρον] αυτου και ακολουθειτω [μοι] 35 [ος] [γαρ] [εαν] [θελη]
[την] [ψυχην] αυτου σωσαι απολεσει αυτην· ο[ς] [δ] [αν] [απολεσει] [την] [ψυχην]
αυτου ενεκεν του ευαγγελιου σωσ[ει] [αυτην]

(Μαρκ 8:36-38)

36 [τι] [γαρ] [ωφελει] [το]ν ανθρωπον εαν κερδηση τον κοσμ[ον] [ολον] [και] [ζημιωθηναι] [την] ψυχην αυτου· 37 τι γαρ δωσει ανθρω[πος] [ανταλλαγμα] [της] ψυχης αυτου· 38 ος γαρ εαν επαισχυνθη [με] [και] [τους] [εμους] [λογους] [εν] [τη] γενεα τη μοιχαλιδι και αμαρτω[λωι] [και] [ο] [υς] [του] [ανθρωπο]ν επαισχυνθησεται αυτον οταν ελθη εν τ[η] [δοξη] [του] [πρς] [αυτο]ν και των αγγελων των αγιων·

(Μαρκ 9:1-18)

1 και ελεγ[εν] [αυτοις] [αμην] [λεγ]ω υμιν οτι εισιν τινες των εστηκοτων ω[δε] [οιτινες] [ου] [μη] [γευ]σονται θανατου εως ιδωσιν την βα[σιλειαν] [του] [θυ] [εληλυ]θυιαν εν δυναμει· 2 και μεθ ημερα[ς] [εξ] [παραλαμβανει] [ο] [ιης] τον πετρον και τον ιακωβον και τον ιω[αννην] [και] [αναφερει] [α]υτους εις ορος υψηλον καθ ιδιαν μον[ους] [και] [εν] [τωι] [προσευ]χεσθαι αυτους μετεμορφωθη· ο ιης [εμπροσθεν] [αυτων] 3 [και] [τα] [ι]ματια αυτου εγενετο στιλβοντα λευκ[α] [λιαν] [οια] [γναφευς] [ου] δυναται επι της γης λευκαναι· 4 κα[ι] [ωφθη] [αυτοις] [ηλια]ς συν μωση· και ησαν συνλαλουγ[τες] [τωι] [ω] 5 [και] [αποκριθεις] [ειπ]εν πετρος τωι ιη̄ ραββει καλον [εστιν] [ημας] [ωδε] [ειναι] [και] [πο]ησωμεν ωδε τρεις σκηνας σοι [μιαν] [και] [μωσει] [μιαν] [και] [ηλια] μιαν· 6 ου γαρ ηδει τι λαλει ησαν [γαρ] [εκφοβοι] 7 [και] [εγενετο] [νεφελη] [επισκια]ζ[ου]σ[α] [α]υτ[ο]υ[ς] [και] [εγενετο] [φωνη] [εκ] [της] [νεφελης] [ου]τος μ[ου] [εστιν] [ο] [υς] [ο] αγαπ[ητος] [ακουετε] [αυτου] 8 [και] [εξαπινα] [περιβ]λεψαμε[νοι] [ουδε]γα ειδ[ον] [αλλα] [τον] [ιν] [μονον] [μεθ] [εαυτων] 9 [και] [κατ]αβ[αι]νο[ντων] [αυτων] [εκ] [του] [ορους] [διεστειλατο] –

18 – [ξηραινεται] [και] [ειπα] [το]ις μαθηταις σου ινα αυτο [εκβαλωσιν] [και] [ουκ] [ισχυσαν]

(Μαρκ 9:19-28)

19 [και] [απο]κριθεις αυτοις ο ιη̄ ειπεν ω [γενεα] [απιστος] [και] [διεστραμμ]ενη εως ποτε προς υμας εσομα[ι] [εως] [ποτε] [ανεξομαι] [υμων] φερετε αυτον προς εμε 20 και ηνεγκ[αν] [αυτον] [προς] [αυτον] [και] [ιδω]ν αυτον ευθεως το π̄να εσπαραξεν αυ[τον] [και] [πεσων] [επι] [της] [γης] εκυλειετο αφριζων 21 και επηρωτησεν τον [πρ̄α] [αυτου] [λεγων] [ποσος] [χ]ρονος εστιν εως τουτο· γεγονεν αυτωι· ο δε [ειπεν] [εκ] [παιδιοθεν] 22 [και] πολλακις αυτον εις πυρ εβαλεν και εις υ[δατα] [ινα] [απολεση] [αυτον] αλλα ει τι δυνα βοηθησον ημιν σπλα[γχνισθεις] [εφ] [ημας] [κυριε] 23 [ο] δε ιη̄ ειπεν αυτωι· ει δυνα παντα δυνα[τα] [τωι] [πισ] [τευοντι] 24 [ευθ]εως κραξας ο π̄ τ[ου] παιδιου ειπεν πι[στευω] [βοηθει] [μου] [τη] απιστια· 25 ιδων δε· ο ιη̄ οτι επισυντρεχ[ει] [οχλος] [επετιμησεν] [τωι] π̄νι

λεγων το αλαλον και κωφον π̄να ε[γω] [επιτασσω] [σοι] [εξελθε] [ε]ξ αυτου και μηκετι εισελθης εις αυτ[ον] 26 [και] [πολλα] [σπαραξας] [αυτο]ν εξηλθεν· και εγενετο ωσει νεκρο[ς] [ωστε] [τους] [πολλους] [λεγειν] [οτι] [α]πεθανεν· 27 ο δε ιη̄ κρατησας της χει[ρο]ς [αυτου] [ηγειρεν] [αυτον] 28 [και] εισελθοντι αυτωι προσηλθον.οι.μ[αθηται] [αυτου] [καθ] [ιδιαν] [αυτ]ωι και ηρωτησαν αυτον λεγοντε[ς] [οτι] [ημεις] [ουκ] [ηδυνηθημεν] εκβαλειν αυτο

(Μαρκ 9:29-31)

29 και ειπεν.αυτοι[ς] [τουτο] [το] [γε] [νο]ς [εν] [ουδενι] [δυ]ναται εξελθειν ει μη εν.προσε[υχη] [και] [νηστεια] 30 [κακειθεν] [εξ]ελθοντες πα[ρε]πορευοντο δια τ[ης] [γαλιλαιας] [και] [ουκ] [ηθελεν] [ινα] [τις] γ[ν]ο[ι] 31 εδιδ[ασ]κεν γ[αρ] τ[ο]υ[ς] [μαθητας] [αυτου] [και] [ελεγεν] [οτι] [ο] [υ]ς [του] ανθρωπ[ο]υ [π]α[ρα]διδοται ει[ς] [χειρας] [ανθρωπων] [και] [αποκτενου]σιν αυ[τον] [και] απ[οκ]ταν[θεις] [4-5] –

(Μαρκ 11:27-33)

27 – [16-20] και ερ[χονται] προς αυτ[ον] [οι] [αρχιερεις] [και] [οι] [γραμματαις] [και] [οι] [πρεσβ]υτερο[ι] 28 [και] [ε]λ[ε]γον αυτ[ωι] [εν] [ποια] [εξουσια] [ταυτα] [ποιεις] [η] [τις] [σοι] [την] εξου[σιαν] [τα]υτην δεδωκεν [ινα] [ταυτα] [ποιης] 29 [ο] [δε] [ιη̄] [ειπεν] [αυτοις] [επερ]ωτω [υμας] [καγω] ενα.λ[ογον] [και] [αποκριθητε] [μοι] [και] [ερω] [υμιν] [εν] [ποια] [εξ]ουσια [τα]υτα ποιω 30 το βα[πτισμα] [το] [ιωαννου] [εξ] [ουρανου] [ην] [η] [εξ] [ανθρ]ωπων [απ]οκριθητε μοι 31 [και] [διελογιζοντο] [προς] [εαυτους] [λεγοντες] εαν [ειπωμεν] εξ ου[ρανου] [ερει] [δια] [τι] [ουν] [ουκ] [επιστευσατε] [α]υτωι 32 [αλλα] [ειπ]ω[μεν] [εξ] [ανθρωπων] [εφοβουντο] [τον] [οχλον] [ο-1παντε]ς γαρ ειχον [τον] [ιωαννην] [οντως] [οτι] [προφητης] [ην] 33 [και] [αποκριθεντες] πωι ιη̄ [λεγουσιν] [ουκ] [οιδαμεν] [και] [αποκριθεις] [ο] [ιη̄] [λεγει] [αυτ]οις ου[δε] [εγω] [λεγω] [υμιν] [εν] [ποια] [εξουσια] [ταυτα] [ποιω]

(Μαρκ 12:1-17)

1 [και] [ηρξατο] [αυ]τοις [εν] [παραβολαις] [λαλειν] [ανθρωπος] [τις] [εφυτευσεν] [αμπε]λων[α] [και] [περιεθηκεν] [φραγμα]ν [και] [ωρυξεν] [υποληνιον] [και] [ωκ]οδ[ομησεν] [πυργον] [και] [εξεδετο] [αυτον] [γεωργοις] – 5 – [ους] [μεν] [δερωντες] [ους] δε απ[οκ]4ντες] 6 [υστερον] [δε] [ετι] [ενα] [υν̄] [εχων] [τον] [αγαπητον] [] αυτου [απεστειλεν] [αυτον] [προς] [αυτους] [εσχατον] [λεγων] [οτι] [εντραπησονται] τον υν̄ [μου] 7 [εκεινοι] [δε] [οι] [γεωργοι] [θεασαμενοι] [αυτον] [ερχομενον] [πρ]ος εαυτου[ς] [ειπαν] [ουτος] [εστιν] [ο] [κληρονομος] [δευτε] [αποκτεινω]μεν αυτον [και] [ημων] [εσται] [η] [κληρονομια] 8 [και] [λαβοντες]

[αυτον] [απ]εκτειν[αν] [και] [εξεβαλον] [αυτον] [εξω] [του] [αμπελωνος] –

13 [και] [αποστελλουσιν] [προ]ς αυ[τον] [τινας] [των] [φαρισαιων] [και] [των] [ηρωδιανων] [ινα] [αυτον] [αγρ]ευσωσ[ιν] [λογωι] 14 οι δε [ε] [ελθοντες] [ηρξαντο] [ερωταν] [αυτον] [εν] [δολωι] [δι]δασκ[αλε] [οιδ]αμε[ν] [οτι] [αληθης] [ει] [και] [ου] [μελει] [σοι] [περι] [ουδενος] [ου] γαρ βλε[πεις] [εις] προσ[ωπον] [ανθρωπων] [αλλα] [επ] [αληθειας] [την] [οδο]ν του [θυ] [δι]δασ[κεις] [εξεστιν] [δουναι] [κηνσον] [καισαρι] [η] [ου] [δω]μεν ουν η [μη] [δω]μεν 15 [ο] [δε] [ειδως] [αυτων] [την] [υποκρισιν] [ειπεν] [αυτοις] τι με πειραζ[ε] υποκ[ριται] [φερετε] [μοι] [δηναριον] [ινα] [ιδω] 16 [οι] [δε] [η]νεγκαν κα[ι] [λε]γει αυ[τοις] [τινος] [η] [εικων] [αυτη] [και] [η] [επιγραφη] [οι] δε ειπον [καισα]ρος· 17 κ[αι] [αποκριθεις] [ο] [η] [ειπεν] [τα] [καισαρος] [αποδοτε] [καισαρι] και τ[α] [του] [θυ] [τωι] [θω] [και] [εξεθαυμαζον] [επ] [αυτωι]

(Μαρκ 12:18-28)

18 [και] [ερχονται] [σαδ]δουκα[ιοι] [προς] [αυτον] [οιτινες] [λεγουσιν] [αναστασιν] [μη] [ειναι] [κα]ι επη[ρωτ]2-4 [αυτον] [λεγοντες] 19 [διδασκαλε] [μωσης] [εγραψεν] ημι[ν] [οτι] [εαν] [τινος] [αδελφος] [αποθανη] [και] [3-4] [γυναικα] [και] [μη] [αφη] [τεκ]νον [ινα] [λαβη] [ο] [αδελφος] [αυτου] [την] [γυναικα] [και] [εξ]αναστηση [σπ]ερμ[α] [τωι] [αδελφωι] [αυτου] – 23 – [αυτην] [γυναικα] 24 [εφη] [αυτοις] [ο] [η] [ου] δ[ια] [τουτο] [πλα]νασθε [μη] [ειδοτες] [τας] [γραφας] [μηδε] [την] [δυνα]μιν τ[ου] [θυ] 25 [οταν] [γαρ] [εκ] [νεκρων] [αναστωσιν] [ουτε] [γαμουσιν] [ουτε] γαμι[ζονται] [αλλ] [εισιν] [ως] [αγγελοι] [εν] [τοις] [ουρανοις] 26 [περι] [δε] [των] νεκρ[ων] [οτι] [εγειρονται] [ουκ] [ανεγνωτε] [εν] [τηι] [βιβλωι] [μωσε]ως επι [του] [βατου] [πως] [ειπεν] [ο] [θς] [εγω] [ο] [θς] [αβρααμ] [και] [ο] [θς] [ισαα]κ και ο θ[ς] [ιακωβ] 27 [ουκ] [εστιν] [θς] [νεκρων] [αλλα] [ζωντων] [πολυ] [πλα]νασθε· 28 κ[αι] [προσελθων] [εις] [των] –

(Λυκα 6:30-39)

30 – [τα] [σα] [μη] [απαιτει] 31 [και] [κ]αθως θε[λετε] [ινα] [ποιωσιν] [υμιν] [οι] [ανθρωποι] [ποιειτε] [αυ]τοις ομοι[ως] 32 [και] [ει] [αγαπατε] [τους] [αγαπωντας] [υμας] [ποια] [υ]μιν χαρ[ις] [εστιν] [και] [γαρ] [οι] [αμαρτωλοι] [τους] [αγαπωντας] [αυτο]υς αγαπ[ωσιν] 33 [και] [γαρ] [εαν] [αγαθοποιητε] [τους] [αγαθοποιουντας] [υμα]ς ποια υμ[ιν] χα[ρις] [εστιν] [και] [οι] [αμαρτωλοι] [το] [αυτο] [ποιου]σιν· 34 κα[ι] [εα]ν δ[7-8] [παρ] [ων] [ελπιζετε] [λαβειν] [ποια] υμιν χα[ρις] και α[μαρτωλοι] [αμαρτωλοις] [δαν]1-2ζου[σιν] ινα απολαβ[ωσιν] [τα] [ισα] 35 [πλην] [αγαπατε] [τους] [εχθρους] [υμων] κ[αι] [αγ]αθοποιε[ιτε] [και] [δανιζετε] [μηδεν] [απελπιζοντες] [κα]ι εσ[ται] [ο] μισθος [υμων] [πολυς] [και]

[εσεσθε] [υιοι] [υψιστου] [οτι] [χρησ]τος [αυτος] εστιν.ε[πι] [τους] [αχαριστους]
[και] [πονηρους] 36 [γινεσ]θε οικ[τε]ιρμονε[ς] [καθως] [και] [ο] [πρ̄] [υμων]
[οικτειρων] [εστιν] 37 [και] [μ]η κρ[ειν]ετε και ο[υ] [μη] [κριθητε] [και] [μη]
[καταδικαζετε] [και] [ου] [μη] κ[αταδικ]ασησ[εσθε] [απολυετε] [και]
[απολυθησεσθε] 38 διδοτε [και] δοθησετα[ι] [υμιν] [μετρον] [καλον]
[πεπιεσμενον] σεσαλευ[μ]ενον υπ[ερεκχυννομενον] [δωσουσιν] [εις] [τον]
[κολπον] υμων τ[ωι] αυτωι μ[ετρωι] [ωι] [μετρειτε] [μετρηθησεται] [υμιν] 39 ειπεν
δ[ε] [π]αραβ[ολην] [αυτοις] [μητι] [δυναται] [τυφλος] [τυφλον] οδηγει[ν] [ου]χι
αμ[φοτεροι] [εις] [βοθυνον] [εμπεσουνται]

(Лукa 6:40-49)

40 [ουκ] [ε]στιν μα[θη]της [υπερ] [τον] [διδασκαλον] [κατηρτισμενος] [δε] πας
εστ[1-2] [ως] [ο] [διδασκαλος] [αυτου] 41 [τι] [δε] [βλεπεις] [το] [καρφος] [το]
ε[ν] τ[ωι] [οφθαλμωι] [του] [αδελφου] [σου] [την] [δε] –

45 – [περισευματος] [καρδιας] [λαλ]ει το στομ[α] [αυτου] 46 [τι] [δε] [με]
[καλειτε] [κε̄] [κε̄] [και] [ου] [ποιειτε] [α] [λ]εγω· 47 πας ο [ερχομενος] [προς] [με]
[και] [ακουων] [μου] [των] λ[ογω]ν και ποιω[ν] [αυτους] [υποδειξω] [υμιν] [τινι]
[εστιν] [ομοιος] 48 [ομοιος] [εστιν] αν[θ]ρωπωι οικ[οδομουντι] [οικιαν] [ος]
[εσκαπεν] [και] [εβαθυνε]ν [και] εθηκεν [θεμελιον] [επι] [την] [πετραν]
[πλημμυρης] δε [γεν]ομενης [προσερηξεν] [ο] [ποταμος] [τηι] [οικια] [εκειν]ηι
κα[ι] [ο]υκ ισχυ[σεν] [σαλευσαι] [αυτην] 49 [ο] [δε] [ακουσας] [και] [μη]
ποι[ησα]ς ομοιο[ς] [εστιν] [ανθρωπωι] [οικοδομησαντι] [οικιαν] [ε]πι την [γην]
χωρις [θεμελιου] [ηι] [προσερηξεν] [ο] [ποταμος] [και] [ε]υθυσ συ[νεπ]εσε[ν] [και]
[εγενετο] [το] [ρηγμα] [της] [οικιας] [εκει]νης μ[εγα]

(Лукa 7:1-7)

1 επει[δ1] [επληρωσεν] [παντα] [τα] [ρηματα] [αυτου] [εις] [τα]ς ακοας τ[ου]
[λαο]υ εισ[ηλθεν] [εις] [καφαρναουμ] 2 [εκατονταρχου] [δ]ε τινος δ[ουλο]ς
κα[κως] [εχων] [ημελλεν] [τελευταν] [ος] [ην] [αυτωι] [εντ]ειμος· 3 α[κου]σας δ[ε]
[περι] [του] [ιη̄] [απεστει] [λεν] [πρεσβυτερους] [τ]ων ιου[δαιων] [ε]ρωτ[ων]
[αυτον] [οπως] [ελθων] [διασωση] [τον] [δο]υλον αυτ[ου] 4 [ο]ι δε
παρα[γενομενοι] [προς] [τον] [ιη̄] [παρεκαλουν] [α]υτον σπ[ου]δαιως λε[γοντες]
[οτι] [αξιος] [εστιν] [ωι] [παρεξη] [τουτο] 5 [α]γαπα [γαρ] το εθνος η[μων] [και]
[την] [συναγωγην] [αυτος] [ωκοδο]μη[σε]ν ημιν 6 [ο] [δε] [ιη̄] [επορευετο] [συν]
[αυτοις] [ηδη] [δε] [αυτου] [ου] [μακ]ραν απεχ[οντος] [απο] [της] [οικιας]
[επεμψεν] [ο] [εκατοντ]αρχος φιλ[ους] [λεγων] [αυτωι] [κε̄] [μη] [σκυλλου] [ου]
[γαρ] [ικανος] [ειμι] [ι]να μου υ[πο] [την] [στεγην] [εισελθης] 7 [διο] [ουδε]
[εμαυτον] [ηξιω]σα.π[ρος] [σε] [ελθειν] [αλλα] –

(Λυκα 9:25-34)

25 – [ζημιωθείς] 26 [ος] [γάρ] [αν] [επαισχυνθη] [με] [και] τους εμους λογους τουτον [ο] [υς] [του] [ανθρωπου] [επαισχυνθησεται] [ο]ταν ελθη εν τη δοξη αυ[του] [και] [του] [πρς] [και] [των] [αγιων] [αγγελων] 27 λεγω δε υμιν αληθως οτι εισιν τινες τω[ν] [αυτου] [εστηκοτων] [οι] [ου] μη γευσονται θανατου εως αν ιδωσιν την βασι[λειαν] [του] [θυ] 28 εγενετο δε μετα τους λογου[ς] [του]τους ωσει ημεραι [οκτ]ω πα[ραλαβ]ων πετρον κα[ι] ιακωβον κα[ι] [ιω]αννην ανεβη εις το ορος προ[σε]υξασθαι· 29 και εγενετο εν τωι [προσ]ευξασθαι αυτον το ειδος του προσωπου αυτου ετερον και ο ιματ[ισμος] αυτου λευκο[ς] [εξ]ασ[τρ]απτων 30 και ιδου ανδρες δυο συνλαλουντ[ες] αυτωι οιτι[νε]ς ησαν μωσης και ηλειας 31 οι οφθεντες εν δοξη [ελε]γον την εξ[οδο]ν αυτου ην εμελλον πληρουν εις ιερουσα[λημ] 32 [ο] [δε] πετρος και οι [συ]ν αυτωι ησαν βεβαρημενοι υπνω διεγρηγορη[σαν]τες δε ειδον την δοξαν αυτου και τους δυο ανδρας τους [συν]εστωτας αυτωι· 33 και εγε[ν]ετ[ο] [ε]ν τωι διαχωριζεσθαι αυτους απ [αυ]του· ειπεν ο πετρος προς τον ιη̄· διδασκαλε καλον εστιν ημας ωδ[ε] [ει]ναι· ποιησωμεν σκηνας τρεις μι[αν] σοι και μιαν μωση κα[ι] [μι]αν ηλεια μη ειδως ο λεγει· 34 ταυτα δε αυτου λεγοντος εγεν[ετο] νεφε[λ]η και επεσκιασεν αυτους εφοβηθησαν δε εν τω[ι] [ε]κεινους εισελθειν εις την νεφελην·

(Λυκα 9:35-47)

35 και φωνη εγενε[το] εκ της νεφελης ουτος εστιν ο υς̄ μου ο εκλελεγμενος· [αυ]του ακουετε· 36 και εγενετο εν τωι γενεσθαι την φωνην [ευ]ρεθη ιη̄ μονος και εσειγησαν· και ουδενι απηγγειλαν εν ε[κει]ναις ταις ημεραις ων εορακεν· 37 εγενετο δε της ημερας [κατελ]θοντων αυτων απο του ορους συνην[τ]ησεν α[υ]τωι οχλος πολ[υς] 38 και ιδ[ο]υ ανη[ρ] απο του οχλου εβησε[ν] [λεγων] διδασκαλε δε[ο]μαι σου επιβ[λ]εσαι επι τον υι[ον] [μου] [οτι] [μονογε]νης μοι ε[στιν] 39 και ιδου π̄να λαμβανει αυτον [και] [εξαιφνης] [κραζει] [και] [σπαρασ]σει αυτον μετα αφρου και μο[ις] [αποχωρει] [απ] [αυτου] [συντρι]βον αυτον· 40 και εδεθην τω[ν] [μαθητων] [σου] [ινα] [εκβαλωσιν] αυτον και ουκ ηδυνηθ[ησαν] 41 [αποκριθεις] [δε] [ο] [ιη̄] [ειπεν] [ω] [γε]νεα απιστος και δι[εστραμμενη] [εως] [ποτε] [εσομαι] [προς] [υμας] και ανε[ξομαι] [υμων] [προσαγαγε] [ωδε] [τον] [υιον] [σου]

45 – απ αυτων ινα μη αισ[θωνται] [αυτο] [και] [εφοβουντο] [ερωτησαι] [αυτον] πε[ρ]ι του ρηματος τρουτου· 46 [εισηλθεν] [δε] [διαλογισμος] εν αυτοις το τις αν ειη με[ιζων] [αυτων] 47 [ο] [δε] [ιη̄] [ειδως] [τον] [δι]αλο[γι]σμον της καρδιας αυτων επι[λαβομενος] [παιδιον] [ε]στησεν αυ[το] [παρ] εαυτον·

(Лυκα 9:48-57)

48 και ειπεν ος αν [δεξηται] [τουτο] [το] [παιδι]ον επι τωι ονο[ματι] μου εμε δεχεται· και ος αν [εμε] δεξ[ητ]αι δεχεται τον απο[στε]ιλαντα με ο γαρ μεικροτε[ρος] εν πασ[ιν] [υ]μιν υπαρχων ουτος [εστ]ιν ο μεγας 49 αποκριθεις δε ιωαννης ε[ι]πεν [δι]δασκαλε ει[δομε]ν τινα εν τωι ονοματι σου εκβαλλον[τ]α δ[αιμ]ονια και εκω[λυο]μεν [ο]τι ουκ ακολουθει μεθ ημων· 50 ειπεν δε [π]ρος αυτον ο ιη̄ [μη] κωλυετε· ου γαρ εστιν καθ υμων ουδε υπερ υ[μ]ων· 51 εγενετο [δε] [ε]ν τωι συμπληρουσθαι τας ημερας της ανα[λημψ]εως αυτου [και] [α]υτος το προσωπον εστηρισεν του πορευεσθαι εις ιερουσαλημ 52 [και] απεστειλεν αγγελους προ π[ρο]σφ[πο]υ και πορευθεντες εισ[ηλθ]ον εις κωμην σαμαρειτων ως ετοιμασαι αυτωι· 53 και ουκ εδε[ξα]ντο αυτον οτι το προσωπο ην αυτου πορευομενου εις ιερου[σα]λημ· 54 ιδοντες δε οι μαθηται ιακωβος και ιωαννης ειπαν κε̄ [θε]λεις ειπωμεν πυρ καταβηναι εκ του ουρανου και αναλωσαι [αυ]τους· 55 στραφεις δε επετειμησεν αυτοις 56 και επορευθησαν [εις] ετεραν κωμην· 57 και πορευομενων αυτων εν τη ο[δ]ωι ειπεν [τις] προς αυτον ακολουθησω σοι οπου εαν υπαγης ειπεν τις προς [αυ]τον ακολουθησω σοι·

(Лυκα 9:58-62)

58 ειπεν αυτωι ο ιη̄ αι αλωπεκες φωλεους ε[χου]σιν και τα πετεινα τ[ο]υ ουρανου κατασκηνωσεις· ο δε υς̄ του [αν]θρωπου ουκ [εχει] [που] [τ]ην κεφαλην κλεινη 59 ειπεν δε προς [ετε]ρον ακο[λουθει] [μοι] [ο] [δε] [ειπε]ν κε̄ επιτρεψον μοι απελθοντι [πρωτο]ν θ[αψαι] [τον] [πρ̄α] [μου] 60 [ειπεν] δε αυτωι αφες τους νεκρους θαψαι [τους] [εαυτων] [νεκρους] [συ] [δε] [απε]λθων διαγγελλε την βασιλειαν [του] [θῡ] 61 [ειπεν] [δε] [και] [ετερος] [ακολουθ]ησω σοι κε̄ πρωτον δε επιτρεψον [μοι] [αποταξασθαι] [τοις] [εις] [τον] [οικο]ν μου· 62 ειπεν δε ο ιη̄ ουδεις εις [τα] [οπισω] [βλεπων] [και] [επιβαλων] [την] χειρα αυτου επ αροτρον ευθε[τος] [εστιν] [τηι] [βασιλεια] [του] [θῡ]

(Лυκα 10:1-13)

1 [μετα] [δε] [ταυτα] [1] γεδειξεν ο κς̄ [ετερους] [οβ̄] [και] [απεστειλεν] [αυτους] [ανα] [δυο] [προ] [προσωπου] [αυ]του εις [πασαν] – 5 –

[οικιαν] [πρωτον] [λεγετε] [ειρηνη] [τωι] [οικωι] [τουτωι] 6 [και] [ε]αυ [εκει] [η] [υς̄] [ειρηνης] [επαναπαησεται] [επ] [αυτον] [η] [ειρηνη] υμων [ει] [δε] [μη] [γε] [εφ] [υμας] [ανακαμψει] 7 [εν] [αυτηι] [δε] [τηι] [οικ]ια με[νετε] [εσθιοντες] [και] [πινοντες] [τα] [παρ] [αυτων] [αξιος] [γαρ] ο εργατης [του] [μισθου] [αυτου] [μη] [μεταβαινετε] [εξ] [οικιας] [εις] [οικ]ια· 8 εις ην εαν πο[λιν] [ει]σερχ[ησθε] [και] [δεχωνται] [υμας] [εσθ]ειετε τα παρατιθεμενα [υμι]ν 9 και [θερ]απευετε [τους] [εν] [αυτηι] [ασθεν]εις και λεγετε αυτ[οις] ηγγικεν εφ [υμας] [η] [βασ]ιλεια του

[θῡ] 10 [εις] [η]ν δ αν πολιν εισε[λθη]τε και μη δε[χωνται] [υ]μας εξελ[θοντ]ες εις τας πλατειας [αυτης] ειπατε 11 και τον κ[ο]ν[ιορ]τ[ο]ν τον ημ[ιν] [εκ] της πολεως εις του[ς] [ποδα]ς απομασσομεθα· πλην τουτο γεινωσκετε [οτι] ηγγικεν η [βασ]ιλεια του θῡ 12 λεγω υμιν οτι σοδομοις εν τ[η] [η]μερα εκεινη ανεκτοτερον εσται η τη πολει εκεινη· 13 [ουαι] [σοι] χοραζειν ουαι σοι βηθσαιδαν οτ[ι] εν τυρω και σειδωνι εγενηθη[σα]ν αι δυναμεις αι γεν[ο]μεναι εν υμιν παλαι αν εν σακκω[ι] [κ]αι σποδοι καθημεναι μετενοησαν·

(Лукa 10:14-26)

14 πλην τυρω[ι] και σ[ε]ι[δω]νι ανεκτοτερον εσται η υμιν· 15 και συ καφαρν[α]ουμ· μη εω[ς] [ου]ρανου υψωθηση και εω[ς] αδου καταβιβασθηση 16 [ο] [α]κρο[υ]ων υμ[ω]ν εμου ακουει και ο υμας αθετων εμε αθε[τ]ει· ο εμ[ε] αθετων αθετει τον αποστειλαντα με· 17 υπεστρεψαν δε οι οβ̄ μετα χαρας λεγοντες κε̄ και τα δαιμονια υποτασσειται ημιν εν τωι ονοματι σου· 18 ειπεν δε αυτοις εθεωρου τον σαταναν ω[ς] αστραπην εκ του ουρανου πεσοντα· 19 ιδου διδωμι υμιν την εξουσιαν του πατειν επανω των οφεων και σκορπιων κ[αι] [επι] πασαν την δυναμιν του εχθρου [κ]αι ουδεν υμας ου μη αδικ[η]ση· 20 πλην εν τουτωι μη χαιρετε οτι τ[α] π̄να υμιν υποτασσειται [χαι]ρετε δε οτι τα ονοματα υμων εγ[ραφη] [ε]ν τρις ουρανοις· 21 εν αυτ[η]ι τη ωρα ηγαλλιασατο εν τωι π[ν̄] [και] [ειπε]ν εξομολογουμαι σο[ι] πρ̄ κε̄ του ουρανου οτι απεκ[ρυψας] [ταυτα] [απο] σοφων και συνετων και απεκαλυψας αυτα ν[η]πιοις [ναι] [ο] [π̄ηρ] [οτι] [ουτως] [ευ]δοκια εγε[νετο] [εμ]προσθεν σου· 22 παν[τα] [μοι] [παρεδοθη] [υπο] [του] [πρ̄ς] [μου] [και] [ουδεις] [γειν]ω[σκ]ει τις [εστιν] [ο] [υς] [ει] [μη] [ο] [π̄ηρ] [και] [τις] [εστιν] [ο] [π̄ηρ] [ει] [μη] [ο] [υς] –

26 ο δ[ε] [ειπεν] [προς] [αυτον] [εν] [τωι] [νομωι] [τι] [γεγραπται] [πως] [αναγινω]σκεις

(Лукa 10:27-36)

27 [ο] [δε] [ειπεν] [αγαπησεις] [κν̄] [τον] [θν̄] [σου] [εξ] [ολης] [της] [καρδιας] [σου] και εν ολη[ι] [11-13] [και] [τον] [πλησιον] [σου] [ως] [σεαυτον] 28 [ει]πεν δε αυτ[ω]ι [ορθως] [απεκριθη]ς [τουτο] [ποιει] [και] [ζηση] 29 [ο] [δε] [θε]λων δικαιοσ[αι] [εαυτον] [ειπεν] [προς] [τον] [ιη̄] [και] [τις] εσ[τιν] [μου] πλησιον 30 υπολαβων δ[ε] [ο] [ιη̄] [ειπεν] [ανθρωπος] τις κατεβαινεν απο ιερουσαλημ ει[ς] ιερωι· και [λησταις] [περι]επεσεν ο[ι] και εκδυσαντες αυτον [και] πληγας επι[θεντες] [α]πηλθον αφε[ν]τες ημιθανη 31 κατα συνκυρειαν ιερεις [τις] κατεβαινεν [εν] τη οδω εκει[ν]η κα[ι] ιδων αυτον αντιπαρηλθεν 32 ομοιος δε και λευιτης [γε]γομενος κατα τον τοπον και ιδων αντιπαρ[η]λθεν· 33 σαμαρει[της] δε τις οδευων ηλθεν κατ αυτον και ιδων [ε]σπλαγγνισθη 34 [κ]αι προσελθων

κατεδησεν τα τραυματα αυτου επιχεας ελαιον [κ]αι οινον· επιβιβασας δε αυτον εις το ιδιον κτηνος ηγαγεν αυ[το]ν εις πανδοκειον και επεμεληθη αυτου 35 και επι [τη]ν επαυριον [ε]κβα[λ]ων εδωκεν δυο δηναρια τωι πανδοκει και ειπεν· επιμε[λ]ηθητι αυτου και ο τι εαν προ[σ]δαπανησης εγω εν τωι [επ]ανερχε[σ]θαι [μ]ε αποδωσω σοι· 36 τις τουτων των τριων δοκει σο[ι] [π]λησιον [γ]εγ[ο]γεναι του εμπεσοντος εις τους ληστας·

(Лукa 10:37-42)

37 ο δε ει[π]εν ο ποι[η]σας το ελεος μετ αυτου· ειπεν δε αυτωι ο ιη̄ πορευου και συ και [π]οιει ομοιως· 38 εν δε τωι πορευεσθαι αυτους εισηλθεν αυτος εις [κ]ωμην τινα· γυνη δε τις ονοματι μαρθα υπεδεξατο αυτον 39 [κ]αι τηδε ην αδελφη καλουμενη μαρια και παρακαθισασα [π]αρα τους ποδας του ιη̄ ηκουσεν τον λογον αυτου· 40 η δε μαρθα [πε]ριεσπατο περι πολλην διακονιαν· επιστασα δε ειπεν κε̄ [μο]υ ου μελει σοι οτι η αδελφη μονην με κατελιπεν διακο[ν]ειν· ειπε ουν αυτη ινα [μο]ι συνλαβηται· 41 αποκριθεις δε ο κς̄ [ει]πεν αυτη· μαρθα [μαρθα] [μ]εριμνας και θορυβαζη περι πολ[λ]α 42 ενος δε εστιν χρε[ια] [μαρια] [γαρ] [τη]ν καλην μεριδα εξελεξατο ητις ουκ αφαιρεθη[σεται] [απ] [αυτης]

(Лукa 11:1-12)

1 και εγενετο εν τωι ειναι αυτον εν τοπωι [τινι] [προσευχομενον] [ω]ς επαυσατο ειπεν τις [των] [μαθητων] [αυτου] [προς] [αυτον] [κε̄] [διδαξο]ν ημας προσευ[χεσθαι] [καθως] [και] [ιωαννης] [εδιδαξεν] [τους] [μα]θη[τας] [αυ]του 2 [ειπεν] – 5 –

[αυτωι] [φιλε] [χρησον] [μοι] [τρεις] [αρτους] 6 [επειδη] [φιλος] [μου] [πα]ρεγε[νετο] [εξ] [οδου] [προς] [με] [και] [ουκ] [εχω] [ο] [παραθησω] [αυτωι] 7 κ̄α[κ]εινο[ς] [εσωθεν] [αποκριθεις] [ειπη] [μη] [μοι] [κοπους] [παρεχε] [ηδη] [η] [θυρα] [κε]κλεισται [και] [τα] [παιδια] [μου] [μετ] [εμου] [εις] [την] [κοιτην] [εισιν] [ου] δυναμαι σοι αν[αστ]ας δωναι· 8 [λεγω] [υμιν] [ει] [και] [ου] [δωσει] [αυτ]ωι αναστας δια [τ]ο ειναι φιλον αυ[του] [δια] [γε] [την] [αναιδειαν] [αυτου] αναστας δωσει αυτωι οσων χρηζει· 9 κα[γω] [υμιν] [λεγω] [αιτειτε] [και] [δ]οθησεται υμιν· ζητειτε και ευρησετε [κρουετε] [και] [αν]υγ[ησεται] υμιν· 10 πας γαρ ο αιτων λαμβανει και ο ζ[ητων] [ευρισ]κει· κα[ι] [τω]ι κρουοντι ανυγησεται· 11 τινα γαρ εξ υμων [πρ̄α] αιτησει υς̄ [ι]χθυν και αντι ιχθυος οφ[ι]ν επιδωσει αυτωι· 12 η κ[αι] εαν αιτησει αρτον επιδωσει αυτωι σκορπιον·

(Лукa 11:13-22)

13 ει ουν υμει[ς] πονηροι υπαρχοντες οιδατε αγαθα δοματα διδοναι τοις τεκν[ο]ις υμων ποσω μαλλον ο πρ̄ υμων ο ουρανιος δωσει π̄να αγα[θ]ον τοις αιτου[σ]ι

αυτον· 14 και ην εκβαλλων δαιμονιον κωφον· και εγενετο του δαιμονιου
εξελθοντος ελαλησεν και εθαυμασα[ν] [ο]ι οχλ[ο]ι· 15 τινες δε εξ αυτω[ν]
ελαλησαν οχυροι λεγοντες· εν βεελζεβουλ τωι αρχοντι των δα[ι]μονιων εκβαλλει
τα δαιμονια· 16 ετεροι δε πειραζοντες σημειον εξ ουρανου εξητουν παρ αυτου· 17
αυτος δε ειδως τα διανοημ[α]τα αυτων ειπεν αυτοις· πασα βασ[ι]λεια μερισθε[ισα]
εφ εαυτην ερημουται· και οικος επι οικον πιπτει· 18 ει δε και ο σατανας εφ εαυτον
εμερισθη πως σταθησεται η βασιλεια [αυ]του οτι λεγετε εν βελζεβουλ εκβαλλει τα
δαιμονια· 19 ει δε εγω εν βεελζεβου[λ] εκβαλλω οι υιοι υμων εν τινι εκβαλλουσιν·
δια τουτο αυτοι εσονται υμων κριται· 20 εν δε εν δακ[τ]υλωι θῡ εκβαλλω τα
δαιμονια αρα εφθασεν εφ υμας η βα[σιλ]εια του θῡ· 21 οταν ο ισχυρος
καθοπλισαμενος φυλασση την α[υλη]ν αυτου εν ειρηνη εστιν τα υπαρχοντα αυτου·
22 επαν δε ισχυροτερο[ς] επανελθων νεικηση αυτον την πανοπλιαν αυτου [αιρει]
[εφ] [η] [επ]εποιθει και τα σκυλα αυτου διδωσι·

(Лукa 11:23-33)

23 ο μη ων μετ εμ[ου] [κατ] [εμου] [ε]στιν· και ο μη συναγων σκορπιζει· 24 οταν
δε το ακ[αθαρτον] [π̄να] [εξελθη] [α]πο του αγθ[ρω]που διερχεται δι ανυδ[ρων]
[τοπων] [ζητουν] [αναπαυ]σιν και μη [ε]υρισκων λεγει υπ[οστρεψω] [εις] [τον]
[οικον] [μου] [οθεν] [εξηλθον] 25 [και] ελθων ευρισ[κει] [σεσαρωμενον] [και]
[κεκοσμημενον] 26 [τοτε] [πορευεται] [κ]αι [παραλαμβανει] [ετερα] [π̄να]
[πονηροτερα] [εαυτου] –

28 – τον λο[γ]ο[ν] [του] [θῡ] [και] [φυλασσοντες] 29 [των] [δε] [οχλων]
[επαθροιζο]μενων η[ρξατο] [λεγειν] [η] [γενεα] [αυτη] [γενεα] [πονηρα] [εστιν]
[σημειον] [τοις] νινευε[ιται]ς ουτως εσται ο υς̄ του ανθ[ρω]που [τη] [γενεα]
[ταυτη] 31 βασιλ[ι]σσα ν[οτ]ου εγεθησεται μετ[α] τω[ν] [ανδρων] [της] [γενεας]
[ταυτης] και κατακρινει αυτην οτι ηλ[θ]εν εκ τ[ων] [περατων] [της] γης ακουσαι
την σοφιαν σολομωνος και ιδου πλ[ειον] [σολομ]ωνος ωδε· 32 ανδρες νινευειται
αναστησ[ο]νται τη κρι[σ]ε[ι] [μετ]α της γενεας ταυτης και κατακρινουσιν αυτην
οτι μετενοησ[αν] [εις] τ[ο] κηρυγμα ιωνα· και ιδου πλειον ιωνα ωδε· 33 ουδεις
λυχνον α[ψ]ας εις κρυπτον τιθησιν αλλα επι την λυχνιαν ινα οι εισπορευομ[ε]νοι
το φεγγος βλεπωσιν·

(Лукa 11:34-43)

34 ο λυχνος του σωματος εστ[ιν] ο οφθαλμος [σ]ου· οταν ο οφθαλμος σου απλους
η και παν το σωμα σ[ο]υ φωτεινον εσται· επαν δε πονηρος η και το σωμα σου
σκοτεινον εσται 35 σκοπει ουν μη το φως το εν σοι σκ[ο]τος εστιν· 36 ει ουν τ[ο]
σωμα σου ολον φωτεινον μη εχων μελος τι σκοτεινον· εσται φωτεινον ολον ως

οταν ο λυχνος τη αστραπη φωτιζη σε· 37 εν δε τωι λαλησαι ηρωτα αυτον
φαρεισαιος οπως αριστηση παρ αυτωι· εισελθων δε αν[επε]σεν 38 ο δε φαρεισαιος
ιδων εθαυμασεν οτι ου πρωτον εβαπτισατο προ του αρ[ι]στου· 39 ειπεν δε ο κς
προ[ς] αυτον νυν υμεις οι φαρει[σ]αιοι το εξω[θ]εν του ποτηριου και του πινακος
καθαριζετε το δε εσωθεν υμων γεμει αρπαγης και π[ο]νηριας· 40 αφρονες ουχ ο
ποιη[σ]ας το εσωθεν και το εξωθεν εποησεν 41 πλην τα ενοντα δοτε ελεημοσυνην
και ιδου παντα καθαρα υμιν εσται· 42 αλλα ουαι υμιν φαρεισαιοι[ς]
[α]ποδεκατουτε το ηδυοσμον και το ανηθον και παν λαχαν[ον] [και] παρερχεσθε
την κρισιν και την αγαπην του θυ· ταυτα δε εδ[ει] [ποιησ]αι κακεινα μη αφειναι·
43 ουαι υμιν το[ι]ς φαρεισαιο[ι]ς οτι αγα[πατε] [την] [π]ρωτοκαθεδριαν εν ταις
συναγωγαις και τους ασπα[σ]μους [εν] [τηι] [αγορ]α·

(Лукa 11:44-54)

44 ουαι υμιν οτι ως εστε μνημεια [α]δηλα [και] [οι] [αν̄οι] [οι] [περιπατο]υντες
επανω ουκ οιδασιν 45 [αποκριθεις] [δε] [τις] [των] [νομικων] [λεγει] αυτωι
διδασκαλε ταυτα [λεγων] [και] [ημας] [υβριζεις] 46 [ο] [δε] [ειπεν] [και] υμιν τοις
νομ[ικ]οις [ουαι] [οτι] [φορτιζετε] [τους] [ανθρωπους] [φορτια] δυσ[βασ]τακ[τα]
[και] – 49 –

[και] [διωξουσιν] 50 [ινα] [εκζητηθη] [το] [αιμα] [παντων] [των] [προφητ]ων το
εκκε[χυμενον] [απο] [καταβολης] [κοσμου] [απο] [της] [γενεας] [τα]υτης 51 απο
αιμα[τος] α[βελ] [εως] [αιματος] [ζαχαριου] [του] [απολομενο]υ μεταξυ του
θυσιαστηριου κα[ι] [του] [οικου] [ναι] [λεγω] [υμιν] [εκζητ]ηθησεται απο της
γενεας ταυτης 52 [ουαι] [υμιν] [τοις] [νομικοις] [οτι] [η]ρατε την κλειδα της
γνωσεως και [αυτοι] [ουκ] [εισηλθατε] [και] [τους] [εισ]πορευομενους εκωλυσατε·
53 κακειθεν [εξελθοντος] [αυτου] [ηρξαντο] [οι] [γρα]μματαις και οι φαρεισαιοι
δεινως εχειν [και] [αποσ]τοματιζειν [α]υτον περι πλειονων 54 ενεδρευοντες αυτον
[θηρευ]σαι τι εκ του στοματος αυτου·

(Лукa 12:1-10)

1 εν οις συναχθεισων των μυρ[ια]δων του λαου ωστε καταπατειν αλληλους·
ηρξατο δε λεγει[ν] [π]ρος τους μαθητας αυτου πρωτον προσεχετε εαυτοις απο της
ζ[υ]μης των φαρεισαιων ητις εστιν υποκρισις· 2 ουδεν δε κεκαλ[υ]μμενον εστιν ο
ουκ αποκαλυφθησεται· 3 ανθ ων οσα εν τη σκ[ο]τια εαν ειπητε εν τωι φωτ[ι]
ακουσθησεται· και ο προς το ους ελαλησατε εν τοις ταμειο[ι]ς κη[ρυ]χθησεται επι
των δωματων· 4 λεγω δε υμιν τοις φιλοις μου μ[η] πτοηθητε απο των
αποκτεινοντων το σωμα και μετα ταυτα μη εχοντων περισσοτερον τι ποιησαι· 5
υποδειξω δε υμιν τινα φοβηθητε· φοβηθητε τον μετα το αποκτειναι εξουσιαν
εχοντ[α] βαλειν εις την γεενναν· ναι λεγω υμιν τουτον φοβηθηναι· 6 ουχι πεντε

στρουθια πωλειται ασσαριων· δυο και εν εξ αυτων ουκ εστιν επιλελησμενον ενωπιον του θυ· 7 αλλα και αι τριχες υμων της κεφαλης πασαι ηριθμημεναι μ[η] φοβεισθε πολλων στρουθιων διαφερετε· 8 λεγω υμιν πας ος αν ομολογηση εν εμοι εμπροσθεν των ανθρωπων και ο υς του ανθρωπ[ου] ομολογησει αυτον εμπροσθεν των αγγελων του θυ· 9 10 και πας ος ερ[ει] [λογον] [εις τον υν του ανθρωπου αφεθησεται αυτω· τωι δε εις [το] [αγιον] [πνα] βλασφημησαντι ουκ αφεθησεται·

(Лукa 12:11-24)

11 οταν δε εισφ[ερωσιν] [υμας] [επι] [τα]ς αρχας και τας συναγωγας και τας εξουσιας [μη] [μεριμνατε] [πως] [η] [τι] [απ]ο[λο]γησησθε η τι [ειπ]ητε 12 το γαρ αγιον [πνα] [διδαξει] [υμας] [εν] [αυτηι] [τηι] [ωρα] [α] δει ει[πειν] 13 [ειπεν] δε [τις] [εκ] [του] [οχλου] [αυτω] [διδασκαλε] [ειπε] [τωι] [αδελφωι] –

18 – [καθε]λω [μου] [τας] [αποθηκας] [και] [μειζονας] [οικοδομησω] [και] [συ]γαξω παντα τον [σιτον] [και] [τα] [αγαθα] [μου] 19 [και] [ερω] [τηι] [ψυχηι] [μου] [ψ]υχη εχεις π[ολλα] [αγαθα] [κειμενα] [εις] [ετη] [πολλα] αναπανου φαγε πιε ευφρα[ινου] 20 [ειπεν] [δε] [αυτωι] [ο] [θς] [αφρων] [τ]αυτηι τη νυκτι την ψυχην σου [απαιτουσιν] [απο] [σου] [α] [δε] [ητο]ιμασας τινι εσται 21 ουτως ο θησαυρι[ζων] [εαυτωι] [και] [μη] [εις] [θν] πλουτων· 22 ειπεν δε προς τους μαθη[τας] [δια] [τουτο] [λεγω] [υμιν] μη μεριμνατε τη ψυχη υμων τι φαγη[τε]· μηδε τωι [σωματι] τι ενδυσησθε· 23 η ψυχη πλειον εστιν της τροφης και το σ[ωμ]α του ενδυματος· 24 κατανοησατε τα πετεινα του ουρανου κα[ι] τους κορακας οτι ου σπειρουσιν ουδε θεριζουσιν οισ ουκ εστιν τα[μ]ειον ουδε αποθηκαι και ο θς τρεφει αυτα· ποσω μαλλον υμεις δ[ι]αφερετε των πετεινων·

(Лукa 12:25-34)

25 τις δε εξ υμων μεριμων δυν[α]ται προσθειναι επι την ηλικιαν [α]υτου πηχυν· 26 ει ουν ουδε ελαχιστον δυνασθε τι περι των λοιπων [μ]εριμνατε· 27 κατανοησατε τα κρινα πως αυξανει ου κοπια ουδε [ν]ηθει· λεγω υμιν ουδε σολομων εν τη δοξηι αυτου περιεβαλετο ως εν τουτων 28 ει δε εν αγρωι σημερον τον χορτον οντα και αυριον εις κλειβανον βαλλομενον ο θς ουτως αμφιεζει ποσω ουν μαλλον υμας ολιγοπιστοι 29 και υμεις μη ζητειτε τι φαγητε και τι πιητε και μη μετεωριζεσθε 30 ταυτα γαρ παντα τα εθνη του κοσμου επιζητει· υμων δε ο πρ̄ οιδεν οτ[ι] χρηζετε τουτων· 31 πλην ζητειτε την βασιλειαν του θυ· και ταυτα προστεθησεται υμιν· 32 μη φοβου το μικρον ποιμνιον οτ[ι] ηυδοκησεν ο πρ̄ υμων δουναι υμιν την βασιλειαν· 33 πωλησατε τα υπαρχοντα υμων και δοτε ελεημοσυνην· ποιησατε εαυ[τοι]ς βαλλαντια μη παλαιουμενα· θησαυρον ανεκλιπτον εν τοις [ουραν]οις οπου κλεπτης ουκ ενγιζει ουδε σης διαφθειρει· 34 οπ[ου] [γαρ] [εστι]ν ο θησαυρος υμων εκει και η καρδια υμων εσται

(Λυκα 12:35-48)

35 εστ[ωσαν] [υμων] [αι] [ο]σφυες περιεζωσμεναι και οι λυχνοι καομεν[οι] 36 [και] [υμεις] [ομοιοι] [α]νθρωποις προσδεχομενοις τον κῡ εαυτ[ων] [ποτε] [αναλυση] [εκ] των γαμων· ινα ελθοντ[ος] ευθεως κ[αι] [κρουσαντος] [ανοιξωσιν] [αυτωι] 37 μακαριοι οι δουλοι ε[κεινοι] [ους] [ελθων] [ο] [κς̄] [ευρησει] [γρηγο]ρουντ[α]ς· α[μην] [λεγω] –

42 – σιτομε[τριον] 43 [μακαριος] [ο] [δουλος] [εκεινος] [ον] [ελθων] [ο] [κς̄] [αυ]του ευρησει ου[τ]ως [π]ριουντα· 44 αλ[ηθως] [λεγω] [υμιν] [οτι] [επι] [πασιν] [τοις] [υ]παρχουσιν αυτωι καταστησει αυ[τον] 45 [εαν] [δε] [ειπη] [ο] [δουλος] [εκεινος] εν τη καρδια αυτου χρονιζει ο [κς̄] [μου] [ερχεσθαι] [και] [αρξεται] [τυ]πτειν τους παιδας και τας παιδισκας εσ[θειν] [τε] [και] [πινειν] [και] [με]θυσκεσθαι 46 ηξει ο κς̄ του δουλου εκειν[ου] [εν] [ημερα] [η] ου [προσδοκα] [κ]αι εν ωρα η ου γεινωσκει και διχοτ[ο]μησε[ι] [αυτον] και το μερος αυτ[ο]υ μετα των απιστων θησει 47 εκεινος ο δ[ουλο]ς ο γνους το θελημα του κῡ αυτου και ποιησας προς το θελημα [αυτο]υ δαρησεται πολλας· 48 ο δε μη γνους ποιησας δε αξια πλη[γων] [δ]αρησεται ολιγας· παντι δε ω εδοθη πολυ ζητηθησεται πολυ [2-3] [αυτ]ου και ω παρεθεντο πολυ περισσοτερον αιτησουσιν αυτον

(Λυκα 12:49-58)

49 [πυ]ρ ηλθ[ο]ν βαλειν εις την γην και τι θελω ει ηδη ανηφθη 50 βαπτ[ι]σμα δε εχω βαπτισθηναι και πως συνεχομαι εως ουτου τελεσθ[η] 51 δοκειτε οτι ειρηνην παρεγενομην δουναι επι της γης ουχι λεγω υμιν αλλα διαμερισμον· 52 εσται απο του νυν εν οικω ενι πεντε· τρις διαμεμερισμενοι επι δυσιν και δυο επι τρισιν 53 διαμερισθησονται υς̄ επι π̄ρι κ[αι] π̄ρ̄ επι υω̄ μητηρ επι την θυγατερ[α] και θυγατηρ επι την μητερα πενθερα επι την νυμφην αυτη[ς] και νυμφη επι την πενθεραν 54 ελεγεν δε και τοις οχλοις οταν ιδητε την νεφελην ανατελλουσαν απο δυσμων ευθεως λεγετε ο[τ]ι ομβρος ερχεται και γεινεται ουτως 55 και οταν νοτον πνεοντα ιδ[η]τε λεγετε καυσων ερχεται και γεινεται· 56 υποκριται το προσωπον τ[ου] ουρανου και της γης οιδατε δοκιμαζειν πλην τον καιρον τουτο[ν] [πω]ς ου δοκιμαζετε· 57 τι δε και αφ εαυτων ου κρεινετε το δικαιο[ν] 58 [ως] [γαρ] υπαγεις μετα του αντιδικου σου επι τον αρχοντα εν τη[ι] [οδωι] [δο]ς εργασιαν απηλλαχθαι απ αυτου μηποτε κατασυρη [σε] [προς] [τον] [κρι]την κα[ι] [ο] κριτης παραδωσει σε τωι πρακτορι κα[ι] [ο] [πρακτωρ] [σε] [βαλει] εις τ[η]ν φυλακην

(Λυκα 12:59)

59 λεγω σοι ου μη εξελθη[ς] [εκειθεν] [εως] [και] [το] [εσχατο]ν λεπτον αποδως·

(Лυκα 13:1-14)

1 παρησαν δε τι[νες] [εν] [αυτωι] [τωι] [καιρωι] [απαγγελλοντες] [αυτωι] [περι] των γαλιλαι[ων] [ων] [το] [αιμα] [πιλατος] [εμιξεν] [μετα] [των] [θυσιων] –

6 – [συκην] [ειχεν] [τις] [πεφυτευμενην] [εν] [τω] [αμπελωνι] [αυτου] και ηλ[θ]εν [ζητων] [καρπον] [εν] [αυτηι] [και] [ουχ] [ευρεν] 7 [ειπεν] [δε] προς τον αμπελουργον [ιδου] [τρια] [ετη] [αφ] [ου] [ερχομ]αι ζητων καρπον εν τη συκηι [ταυτηι] [και] [ουχ] [ευρισκω] [εκκοπον] [α]υτην ινατι και την γην καταργει 8 [ο] [δε] [λεγει] [αυτωι] [κε] [αφες] [αυ]την και τουτο το ετος εως οτου σ[καψω] [περι] [αυτην] [και] [βαλω] [κοπρι]α 9 και εαν μεν ποιηση καρπον ει [δε] [μη] γε εις [το] [μελλον] [εκκοπο]ν αυτην· 10 ην δε διδασκων τοις σαββασιν εν μια τ[ων] [συν]α[γ]ωγω[ν] 11 και ιδου γυνη π̄να εχουσα ασθeneιας ετη ῑη και η[ν] [συ]κ[υ]πτου[σ]α και μη δυναμενη ανακυψαι εις το παντελες 12 ι[δων] δε αυτην προσεφωνησεν και ειπεν αυτη γυναι απολελυσαι τ[ης] [α]σθeneιας σου 13 και επεθηκε αυτη τας χειρας και παραχρημα [αν]ρ̄θωθη και εδοξασεν τον θ̄ν· 14 αποκριθεις δε ο αρχισυναγωγος αγα[ν]ακτων οτι τωι σαββατωι εθεραπευσεν ο ῑη̄ ελεγεν τωι οχλωι εξ ημ[ερ]αι εισιν εν αις δει εργαζεσθαι εν αυταις ουν ερχομενοι θεραπευεσθε και μη τη ημερα του σαββατου·

(Лυκα 13:15-24)

15 απ[ο]κριθεις δε αυτωι ο κ̄ς̄ ειπεν υποκριτα εκαστος υμων τωι σαββατωι ου λυει αυτου τον βουν η τον ογον απο της φατνης και απαγαγων πο[τ]ιζει· 16 ταυτην δε θυγατε[ρ]α [α]βρααμ ουσαν ην εδησεν ο σατανας [ι]δου ῑη̄ ετη ουκ εδει λυθη[ν]αι απο του δεσμου τουτου τη ημερα του σαββατου 17 και ταυτα λεγοντος αυτου κατησχυνοντο οι αντικειμενοι α[υ]τωι· και πας ο οχλος εχαιρεν [ε]ν πασιν τοις ενδοξοις τοις γεινομενοις υπ αυτου· 18 ελεγεν ουν τινι ομο[ι]α εστιν η βασιλεια του θ̄ν και τινι ομο[ι]ωσω αυτην· 19 ομοια εστιν κοκ[κ]ωι σιναπεως ον λαβων ανθρωπος εβαλεν εις τον κηπον αυτου κ[αι] [η]ῡξησεν και εγενετο εις δενδρον μεγα και τα πετεινα του ουραν[ου] [κατε]σκηνωσεν εν τοις κλαδοις αυτου· 20 και παλιν ειπεν τινι ομο[ι]ωσω [την] [β]ασιλειαν του θ̄ν· 21 ομοια εστιν ζυμη ην λαβουσα [γ]υνη εκρυψεν [εις] [αλευρου] σατα τρια εως ου εζυμωθη ολον 22 [κα]ι διεπορευετ[ο] [κατα] [πολεις] [και] [κωμ]ας διδασκων την πορειαν ποι[ου]μενος εις [ιεροσολυμα] 23 [ειπεν] [δε] [τις] [αυτ]ωι κε̄̄ ει ολιγοι οι σωζομενοι [ο] [δε] [ειπεν] [προς] [αυτους] 24 [αγωνι]ζεσθε [δια] της στενης θυρας εισελ[θ]ειν [οτι] [πολλοι] [λεγω] [υμιν] [ζητη]σουσιν [εισελθειν] και ουκ ισχυσου[σιν]

(Λυκα 13:25-35)

25 [αφ] [ου] [αν] [εγερθη] [ο] [οικοδεσποτης] [και] [αποκλειση] [την] θυ[ρ]αυ
[και] [αρξησθε] –

29 – [α]νακλι[ιθησονται] [εν] [τη] [βασιλεια] [του] [θυ] 30 [και] [ιδου] [εισιν]
[εσχατοι] [οι] [εσοντ]αι πρωτοι και πρωτοι [οι] [εσονται] [εσχατοι] 31 [εν] [αυτη]
[τη] [ωρα] [προσ]ηλθον τινες φαρεισαι[οι] [λεγοντες] [αυτωι] [εξελθε] [και]
[πορευου] [εντευθεν] οτι ηρωδης σε θελει απο[κτειναι] 32 [και] [ειπεν] [αυτοις]
[πορευθεντες] ειπατε τη αλωπεκι ταυτη[ι] [ιδου] [εκβαλλω] [δαιμονια] [και]
[ιασεις] ποιουμαι και σημερον κ[αι] [αυριον] [και] [τη] [τριτη] [τελειουμαι] 33
πλην δει με σημερον και α[υριον] [και] [τη] [εχομενη] [πορευεσθαι] [οτι] ουκ
ενδεχεται προφητην α[πολεσθαι] [εξω] [ιερουσαλημ] 34 [ιερουσα]λ[ημ]
ιερουσαλημ η αποκτεινου[σα] [τους] [προφητας] [και] [λιθοβολ]ουσα τους
[α]πεσταλμενους προς αυ[τ]ην [ποσακις] [ηθελησα] [επισυ]ναξαι τα [τε]κνα σου
ον τροπον ορ[νι] [την] [εαυτης] [νοσσιαν] [υπ]ο [τα]ς [π]τερυ[γας] και ουκ
ηθελησατε· 35 ιδ[ου] αφι[εται] [υμιν] [ο] [ο]ικ[ος] [υμων] [λ]εγω υμ[ιν] [ο]υ μη με
ιδητε εως αν [ει]πητε ευ[λο]γημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυ·

(Λυκα 14:1-10)

1 και εγενετο εν τωι ελθειν α[υ]τον εις οικον τινα των αρχον[τω]ν φαρεισαιων εν
σαββατωι φαγ[ειν] αρτον και αυτοι ησαν παρα[τ]ηρουμενοι αυτον 2 και ιδου
ανθρωπος τις ην υδρωπικος εμπροσθεν [α]υτου· 3 και αποκριθεις ο ιης ειπεν
π[ρος] τους νομικους και φαρεισαιους λεγων ει εξεστιν τωι σαββατ[ωι]
[θ]εραπευσαι· 4 οι δε ησυχασαν· και επιλαβομενος ιασατο αυτον κα[ι] [α]πελυσεν·
5 και προς αυτους ειπεν τινος υμων η υιος η βους ει[ς] [φρεα]ρ πεσειται και
ευθεως ου[κ] ανασπασει αυτον εν ημερα του σ[αββατ]ου· 6 και ουκ ισχυσαν
ανταπ[ο]κριθηναι προς ταυτα· 7 ελεγεν δε π[ρος] [του]ς κεκλημενους παραβ[ο]λην
επεχων πως τας πρωτοκλισ[ιας] [εξε]λεγοντο λεγων προς αυτο[υς] 8 οταν κληθης
υπο τινος εις γαμ[ους] [μη] [κατα]κλεινου εις την πρωτοκλισιαν μηποτε
εντειμοτερ[ος] [σου] [η] [κεκλημ]ενος 9 και ελθων ο σε και αυτον καλεσας ερει
σοι δος [τουτωι] [τοπον] [και] [τοτε] [αρ]ξη μετ αισχυ[νης] [τον] εσχατον τοπον
κατεχει[ν] 10 [αλλ] [οταν] [κληθης] [πορευθεις] [α]ναπεσ[ε] [εις] [τον] εσχατον
τοπον ιν[α] [οταν] [ελθη] [ο] [κεκληκως] [σε] [ερει] [σοι] [φιλε] [προσαναβηθι]
[ανω]τερον κα[ι] [τοτε] [εσται] [σοι] [δοξα] [ενωπιον] [παντων] [των] –

(Λυκα 14:17-26)

17 – [τον] [δουλον] [αυτου] [τη] [ωρα] [του] [δειπ]νου ειπειν τρι[ς] κεκ[λημενοις]
[ερχεσθε] [οτι] [ηδη] [ετοιμα] [εσ]τιν· 18 και ηρξαντο απο μι[ας] [παντες]
[παραιτεισθαι] [ο] [πρωτος] [ειπεν] [αυτωι] [αγ]ρον ηγορασα και εχω αναγ[κην]

[εξελθων] [ιδειν] [αυτον] [ερωτω] [σε] [εχε] με παρητημενον· 19 και [ε]τ[ερος]
[ειπεν] [ζευγη] [βοων] [ηγορασα] [πεντ]ε και πορευομαι δοκιμασα[ι] [αυτα]
[ερωτω] [σε] [εχε] [με] [παρητημενον] 20 [και] ετερος ειπεν γυναικα.ηγα[μηκ]α
κ[αι] [δια] [τουτο] [ου] [δυναμαι] [ελθειν] 21 [π]αραγενομενος ο δουλος
απηγγειλεν τ[ωι] [κω̄] [αυτου] [ταυτα] [τοτε] [οργισ]θεις ο οικοδεσποτης ειπεν τωι
δουλ[ωι] [αυτου] [εξελθε] [ταχεως] [εις] τας πλατειας και ρυμας [της] πολεως
κα[ι] [τους] [πτωχους] [και] [αναπ1-2]ρους και τυφλους και χωλ[ους] εισαγαγ[ε]
[ωδε] 22 [κ]αι ε[ιπεν] [ο] [δουλος] [κε̄] [γεγονεν] ο επεταξας και ετι τ[ο]πος εστιν·
23 και ειπεν ο κς̄.π[ρο]ς τον δουλον εξελθε εις τας οδους κα[ι] τους φραγμους και
ποιησο[ν] εισελθειν ινα γεμισθη ο οικος μ[ου] 24 [λε]γω γαρ υμιν οτι ουδεις των
ανδρων εκεινων των κεκλημενων γευσεται μου του δειπνου· 25 σ[υ]νεπορευοντο
δε αυτωι οχλοι πολλο[ι] και στραφεις ειπεν προς [αυ]τους 26 ει τις ερχεται προς
εμε και ου με[ι]σει τον πᾱρα αυτου και την [μη]τερα και την γυναικα και τα τεκνα
[και] τους αδελφους και τας αδ[ε]λφας ετι δε και την εαυτου ψυχην [ου] δυναται
μου ειναι μαθητ[ης]

(Лукa 14:27-33)

27 οστις ου βασταζει τον σ̄ρ̄ν αυτου κα[ι] ερχεται οπισω μου ου δυν[ατα]ι μου
ειναι μαθητης 28 τις γαρ.εξ [υ]μων ο θελων πυργον οικο[δο]μησαι ουχι πρωτον
καθισας ψηφιζε[ι] την δαπανην ει εχει.ε[ις] [απα]ρτισμον 29 ινα μηποτε θεντος
αυτου θεμελιον και μη ισ[χυ]νοντος εκτελεσαι παντες οι θεωρουντες αρξωνται
εμπαιζε[ιν] [αυτωι] 30 [λεγο]ντες οτι ουτος ο ανθρωπος ηρξ[α]τ[ο] οικοδομειν
[και] [ουκ] [ισχυσεν] [εκτε]λεσαι· 31 η τις βασιλευς πορευο[μ]ενος ε[τερωι]
[βασιλει] [συμβ]αλειν [εις] πολεμον ου καθισας πρωτον [βου]λευσεται [ει]
[δυνατος] [εστιν] [εν] [δεκα] [χι]λιασιν υπαντησαι τω[ι] [μετα] [εικοσι]
[χι]λιαδων [ερχομενωι] [επ] [αυ]τον· 32 ει δε μη γε ετ[ι] [αυτου] [πορρω] [οντος]
[πρεσβειαν] [αποστειλας] [ερωτα] [τα] [προς] ειρηνην· 33 ου[τως] [ουν] [πας] [εξ]
[υμων] [ος] [ουκ] [αποτασσει] [πασιν] [τοις] [εαυ]του υπ[α]ρ[χουσιν] –

(Иоанн 4:51-54)

51 – [καταβαινοντος] [οι] [δουλοι] [αυτου] [υπ]ηνητ[ησαν] [αυτωι] [και]
[απηγγειλαν] [λεγοντες] [οτι] [ο] [παις] [αυτου] [ζη] 52 [επυθ]ετο ου[ν] [την]
[ωραν] [παρ] [αυτων] [εν] [ηι] [κομψοτερον] [εσχεν] [ειπαν] [ου]ν οτι ε[χθες]
[ωραν] [εβδομην] [αφηκεν] [αυτον] [ο] [πυρετος] 53 [εγνω] [ουν] ο πᾱρατ[ι] [εν]
[εκεινηι] [τηι] [ωρα] [εν] [ηι] [ειπεν] –

[ολη] 54 τ[ο]υ[το] [δε] [παλιν] [δευτερον] [σημειον] [εποιησεν] [ο] [ιη̄] [ελθων]
[εκ] [της] [ι]ουδα[ιας] [εις] [την] [γαλιλαιαν]

(Ἰωανν 5:1-25)

1 [μετα] [ταυτα] [ην] [εορτη] [των] [ιουδαιω]ν και [ανεβη] [ιη̄] [εις] [ιεροσολυμα]
2 [εστιν] [δε] [εν] [τοις] [ιεροσολυ]μοις [επι] [τη] [προβατικη] [κολυμβηθρα] [η]
[επιλεγομενη] [εβραιστι] –

20 – [ινα] [υμεις] [θαυμαζητε] 21 [ωσπ]ερ γα[ρ] [ο] [πρ̄] [εγειρει] [τους] [νεκρους]
[και] [ζωοποιει] [ουτως] [και] [ο] [υς̄] [ους] [θε]λει ζω[οποιει] 22 [ουδε] [γαρ] [ο]
[πρ̄] [κρινει] [ουδενα] [αλλα] [την] [κρισιν] [πα]σαν εδ[ωκεν] [τωι] [υω̄] 23 [ινα]
[παντες] [τιμωσι] [τον] [υν̄] [καθως] [τιμωσι] [το]ν πρ̄α [ο] [μη] [τιμων] [τον] [υν̄]
[ου] [τιμα]

[τον] [πρ̄α] [τον] [πεμψαντα] [αυτον] 24 [αμην] [αμην] [λεγω] [υμιν] [οτι] [ο]
[τ]ον λο[γον] [μου] [ακουων] [και] [πιστευων] [τωι] [πεμψαντι] [με] [εχει] [ζωην]
αιων[ιον] [και] [εις] [κρισιν] [ουκ] [ερχεται] [αλλα] [μεταβεβηκεν] [εκ] [του]
θανα[του] [εις] [την] [ζωην] 25 [αμην] [αμην] [λεγω] [υμιν] [οτι] [ερχεται] [ωρ]α
κα[ι] [νυν] –

(Ἰωανν 10:7-16)

7 [ειπ]ε[ν] [ουν] αυτοις ο ιη̄· α[μην] [αμην] [λεγ]ω υμιν [οτι] ε[γω] ε[ιμι] [η]
[θυρα] [των] προβατων· 8 παντες οσοι [ηλθον] [κλεπτ]αι εισιν και λησται· α[λλ]
[ουκ] [η]κουσεν αυτων τα προβατα 9 [εγω] [ειμι] [η] θυ[ρ]α· δι εμου εαν τις
εισ[ελθη] [σωθη]σεται· και εισελευσεται· και εξ[ε]λ[ε]υσεται· και νομην ευρησει·
10 [ο] [κλεπτης] ουκ ερχεται ει μη ινα κλεψη και θυση και απολεση· εγω δ[ε]
[ηλθον] ινα ζωην εχωσι· και περισσον εχωσιν· 11 εγω ειμι ο καλος ποι[μην] ο
καλος ποιμην· την ψυχην αυτου διδωσιν υπερ των προβ[ατων] 12 [ο] μισθωτος και
ουκ ων ποιμην· ου ουκ εστιν ιδια τα προβατα· [θεωρει] τον λυκον ερχομενον και
αφειησιν τα προβατα· και φευγει· κ[αι] [ο] [λυκος] αρ[π]αζει αυτα και σκορπιζει·
13 οτι μισθωτος εστιν και ου μελε[ι] [αυτωι] περι των προβατων· 14 εγω ειμι ο
ποιμην ο καλος και γειν[ωσκω] [τα] εμα· και γεινωσκουσι με τα εμα· 15 και καθως
γεινωσκει [με] [ο] [πρ̄] καγω γεινωσκω τον πρ̄α· και την ψυχην μου διδωμι υπ[ερ]
[των] προβατων· 16 και αλλα προβατα εχω απερ ουκ εστιν εκ της [αυλης] ταυτης·
κακεινα δει με αγαγειν· και της φωνης μου ακουσου[σιν]· και γενησονται μια
π[ο]ιμνη· εις ποιμην·

(Ἰωανν 10:17-29)

17 δια [τουτο] [με] [ο] [πρ̄] αγαπα οτι εγω τιθημι τη[ν] ψυχην μου ινα παλι[ν]
[λαβω] [αυτην] 18 ουδεις ηρεν αυτην απ εμ[ου] αλλα εγω τιθημι αυ[την] [απ]

[εμαυτου] εξουσιαν εχω θειναι αυ[τ]ην· και παλιν εξου[σιαν] [εχω] [λαβειν] [αυ]την· ταυτην ελαβον [ε]ντολην [π]αρα του [πρ̄ς] [μου] 19 [σχισμα] [παλιν] [εγ]γενετο εν τοις ιουδαιοις [δ]ια τους λογους του[τους] 20 [ελεγον] [δε] [πολλο]ι εξ αυτων οτι δαιμον[ιο]ν εχει και μαινε[ται] [τι] [αυτου] [ακουετε] 21 [αλ]λοι ελεγον ταυτα τα ρη[μ]ατα ουκ εστιν δα[ιμονιζομενου] [μη] [δα]ιμονιον δυναται τυ[φ]λων οφθαλμους [ανοιξαι] 22 [εγενετο] [τοτε] [τ]α ενκαινια εν ιεροσ[ολυμο]ις· χειμων δε [ην] 23 [και] [περιεπατει] [ο] [ιη̄] [ε]ν τωι ιερωι εν τη στ[οα] [του] [σ]ολομωνος· 24 εκ[υκλωσαν] [ουν] [αυτον] [οι] ιουδαιοι και [ελεγον] [αυτωι] ε[ω]ς ποτε τη[ν] [ψυχην] [ημων] [αιρεις] [ει] [σ]υ ει [ο] [χς̄] [ειπε] [ημιν] [παρρησια] 25 [κ]αι απε[κριθη] [αυτοις] [ο] [ιη̄] –

29 – [χειρος] [του] [πρ̄ς]

(Ιωανη 10:30-39)

30 [εγω] [και] [ο] [πηρ̄] [εν] [εσμ]εν· 31 εβαστασαν λιθ[ους] [οι] [ιουδ]αιοι ινα λιθασωσ[ιν] [αυτον] 32 [και] [α]πεκριθη αυτοις [ο] [ιη̄] [πολλα] [εργα] [κ]αλα εδειξα υμιν εκ τ[ου] [πρ̄ς] [δια] ποιον αυτων εργον εμε [λιθα]ζετε· 33 απεκριθησαν α[υτωι] [οι] [ιο]υδαιοι περι καλου εργου ου λι[θαζο]μεν σε· αλλα περι βλασφημιας· και οτι συ ανθρωπος ων [ποιε]ις σεαυτον θ̄ν· 34 απεκριθη αυτοις ιη̄· ουκ εστιν γεγραμμενον [εν] [τη]ι γραφηι εν τωι νομωι οτι εγω ειπα θεοι εστε· 35 ει εκεινους ε[ιπεν] [θε]ους και ου δυναται λυθηναι 36 ον ο πρ̄ ηγιασεν και απεστει[λεν] [ει]ς τον κοσμον· υμεις λεγετε οτι βλασφημεις οτι ειπον ο υς̄ [του] [θῡ] ειμι· 37 ει ου ποιω τα εργα του πρ̄ς μου μη πιστευετε μοι· 38 ει δε [ποιω] καν εμοι μη πιστευητε· τοις εργοις πιστευσατε· ινα γνωτε [και] [γει]γνωσκητε οτι εν εμοι ο πρ̄· καγω εν αυτωι· 39 εζητουν δε αυτον [πιασαι] και εξηλθεν εκ της χειρος αυτων·

(Ιωανη 10:40-42)

40 και απηλθεν παλιν πε[ραν] [το]υ ιορδανου εις τον τοπον οπου ην ιωαννης το προτερον βα[πτιζω]ν· και εμεινεν εκει· 41 και πολλοι ηλθον προς αυτον· και ελε[γον] [οτι] ιωαννης μεν σημειον εποιησεν ουδε εν· παντα δε οσα [ιωανν]ης ειπεν περι τουτου αληθη ην· 42 και πολλοι επιστευσαν ει[ς] [αυτον]

(Ιωανη 11:1-10)

1 [ην] δε τις ασθενων λαζαρος απο βηθανιαμ εκ της κωμη[ς] [μαριας] και μαρθας της αδελ[φ]ης αυτης· 2 ην δε αυτη η μαρ[ια] [η] [αλειψασα] [το]ν κν̄ μυρωι· και εκμ[αξασ]α τους ποδας αυτου ταις θρι[ξιν] [αυτης] [ης] ο αδελφος λαζαρ η[σθε]νει· 3 απεστειλαν [ου]ν αι αδελ[φαι] [προς] [αυτον] [λεγ]ουσαι· κ̄̄ ιδε ον φι[ιλ]εις ασθενει· 4 ακουσας δε [ε] [ο] [ιη̄] [ειπεν] [αυτη] [η] ασθεν[ε]ια ουκ εστιν

προς θανατον αλλ [υπερ] [της] [δοξης] [το]υ θῡ. ινα δοξασθη [ο] υς̄ αυτου δι
αυτης· 5 ηγαπα [δε] [ο] [ιη̄] [την] [μαρθαν] και την αδελφη[ν] αυτης και τον
λαζαρον 6 [ως] [ουν] [ηκουσεν] [οτι] ασθenei. τοτε με[ν] εμεινεν επι τωι τοπ[ωι]
[δυο] [ημερας] 7 [επειτα] μετα τουτο λεγε[ι] [α]γωμεν εις την ιουδα[ιαν] [παλιν] 8
[λεγουσιν] [α]υτωι οι μαθητα[ι] [ραβ]βει νυν εζητουν σε λιθασαι [οι] [ιουδαιοι]
[και] [π]αλιν υπαγεις [εκει] 9 [α]πεκριθη ο ιη̄· ουχι δω[δεκα] [ωραι] [εισιν] [της]
ημερας· εαν [τις] [εν] [τηι] ημερα περιπατη [ου] [προσκοπτει] [οτι] [το] [φ]ως του
κοσ[μου] [τουτου] [βλεπει] 10 [εαν] [δε] [τις] περιπ[ατη] –

(Ιοαηη 11:18-27)

18 – [βηθανια] [εγγυς] [τω]ν ιε[ροσολυμων] [ως] [απο] [σταδιων] [δε]καπεντε 19
πο[λλοι] [δε] [εκ] τ[ων] [ιου]δαιων εληλυ[θεισαν] [προς] [τας] [πε]ρι μαρθαν και
[μαριαν] ινα παραμυθησωνται αυ[τας] πε[ρι] του αδελφου 20 η ουν μαρθα ω[ς]
[ηκ]ουσεν οτι ιη̄ ερχεται υπη[ν]τησ[ε]ν αυτωι· μαρια δε εν τωι οικ[ωι] εκαθεζετο·
21 ειπεν ουν η [μ]αρθα[α] προς τον ιν̄ κε̄ ει ης ωδε ο α[δελ]φος μου ουκ αν
απεθανεν· 22 αλ[λα] [κα]ι νυν οι[δ]α οτι οσ[α] αν αιτ[η]σης τον θν̄ δωσει σοι ο θς̄·
23 λ[ε]γει αυτηι [ο] [ιη̄] [ανα]στησε[ται] [ο] αδελφ[ος] σου· 24 λεγει αυτωι
μαρθα οίδα [οτι] [ανα]στησ[εται] εν τ[ηι] [ανα]στα[σει] εν τη εσχατη ημερα 25
ειπ[εν] [αυτηι] [ο] [ι]η̄ εγω ειμ[ι] [η] [ανα]στα[σις]· ο πιστευων εις εμε [κ]αν
[απο]θανη [ζη]σει· 26 κα[ι] [πας] [ο] [ζων] και πιστευων εις εμε ου μη απ[ο]θανη
[εις] [τον] [αιωνα] [πιστευεις] τουτο· 27 λεγει αυτωι ναι κε̄ εγω π[ε]πιστευκα [οτι]
[συ] [ει] [ο] [χς̄] [ο] [υς̄] [του] θῡ ο εις τον κοσμον ερχ[ο]μενο[ς]

(Ιοαηη 11:28-37)

28 [και] [τουτο] [ειπουσα] [απηλθεν] [και] εφωνησεν μαριαν την αδελ[φην]
[αυτης] [λαθρα] [ειπουσα] [ο] [διδ]ασκαλος παρεστιν· και φωνει σε 29 [εκεινη]
[δε] [ως] [ηκουσεν] [εγ]ειρεται ταχυ και ερχεται προς [αυ]τον· 30 ο[υ]πω [δε]
[εληλυθει] [ο] [ιη̄] εις τ[ην] κωμην αλλ ην επι τ[ωι] τοπ[ωι] [οπου] [υπη]νητησεν
[αυ]τωι μ[αρ]θα· 31 οι ουν ιουδαιοι οι οντ[ες] μετ[α] αυτης [εν] [τηι] [οικια] [και]
παραμ[υ]θουμενοι αυτην ιδοντ[ες] [τη]ν μ[αριαμ] [οτι] [ταχεως] [ανε]στη κα[ι]
[ε]ξηλθεν ηκ[ο]λουθησ[αν] [αυτηι] [δοξαν]τε[ς] [οτι] [εις] [το] [μνη]μειο[ν]
[υ]παγει ινα κλαυση εκ[ει] 32 [η] [ουν] [μαρ]ια ως η[λθεν] [οπου] ην ο ιη̄ [κα]ι
ιδουσα αυτον επεσ[εν] [αυτου] [προς] [το]υς ποδ[α]ς λ[ε]γουσα [αυτωι] [κε̄] ει ης
ωδε ουκ αν απ[ε]θανεν [μου] [ο] [αδελ]φος 33. ιη̄ ουν [ως] [ειδεν] [αυ]την
κλαιουσαν κα[ι] [τους] [ιουδαιους] [κλαιο]ντας τ[ους] [συνε]ληλυ[θο]τας αυτη
εταραχ[θη] [τωι] [πνῑ] [ως] [εμβριμ]ουμεν[ος] 34 [και] [ειπεν] [π]ου τεθεικατε
αυ[τον] [λεγουσιν] [αυτωι] [κε̄] [ερχου] [και] [ιδε] 35 [εδακρυσεν] [ο] ιη̄· 36
ελεγον ου[ν] [οι] [ιουδαιοι] [ιδε] [πως] [εφιλει] [αυτον] 37 [τινες] [δε] [εξ]
[α]υτ[ων] [ειπαν] [ουκ] [εδυνατο] [ουτος] [ο] [ανοιξας] [τους] [οφθαλμους] –

(Ιωανη 11:42-51)

42 – [ειπον] [ινα] [πιστευσωσιν] [οτι] [συ] [με] [απεσ]τειλας 43 κ[αι] ταυτα
[ειπων] [φω]νηι μεγα[ληι] [εκκραυγασ]εν [λαζαρε] δευρο εξω 44 εξηλ[θεν] [ο]
[τεθ]νηκωσ δεδεμεν[ο]ς [το]υσ.π[οδ]αs και τασ χειραs κηριαs. και [η] [ο]ψιs αυτου
σουδαριωι εδ[εδ]ετο. λ[ε]γει αυτοις ο ιη̄ λυσατε αυτον κ[αι] [α]φετε αυτον υπαγειν·
45 πολ[λο]ι εκ [τ]ων ιουδαιων οι ελθοντες προς [τ]ην μ[α]ριαν εωρακοτε[ς] α
[ε]ποι[ησ]εν επιστευσαν. εις αυτον 46 τι[ν]εs δε [εξ] [αυ]τω[ν] απη[λθον] προς
[το]υσ φαρεισαιουσ και ειπον αυ[τοις] [α] [επ]οησεν [ιη̄] 47 [συνηγ]αγον [ο]υν οι
αρχιερειs και οι φαρεισαι[οι] [συνε]δριον και [ι] [ελεγον] [τι] [π]οησομεν· ουτοσ ο
ανθρωποσ πολ[λα] [ποιει] σημεια 48 [εαν] [αφωμ]εν αυτον. ουτωs. παντεs
πιστευ[σουσιν] [εις] αυτ[ον] [και] [ελευσοντα]ι οι [ρω]μαιοι και αρουσιν ημων
[και] [τον] [τοπον] [και] [το] [εθνοσ] 49 ειs δε τιs εξ αυτων καιφασ αρχιε[ρευς]
[ων] [του] [ενιαυτου] [εκειν]ου ειπ[ε]ν αυτοις υμειs ουκ οιδατε αυ 50 [ουδε]
[λογιζεσθε] [οτι] [συμ]φερει υμιν ινα ειs ανθρωποσ απο[θανη] [υπερ] [του] [λαου]
[και] [μη] [ολ]ον το εθνοσ αποληται 51 τουτο δε αφ ε[α]υτου [ουκ] [ειπεν] [αλλα]
[αρχι]ερευ[ς] [ω]ν επροφητευσεν οτι ημελ[λ]εν ιη̄ [αποθνησκειν] [υπερ] του
ε[θν]ουs

(Ιωανη 11:52-57)

52 και ουχ υπερ. τ[ο]υ εθνο[υς] [μ]ογο[ν] [αλλ] [ινα] [και] [τα] [τεκν]α του [θῡ] τα
εσκορπισμενα συναγα[γη] [ε]ις εν 53 [απ] [εκεινης] [ουν] της η[με]ραs
εβουλευσαντο ι[να] [α]ποκ[τεινωσιν] [αυτο]ν 54 [ιη̄] [ουν] [ουκετι] παρησια
περιεπατει [εν] [τ]οις ιω[υδαιοις] [αλλ]α απη[λθεν] [εις] [τη]ν χωραν εγγυs της
ε[ρημου] [εις] [εφραιμ] λεγομε[νην] [πολιν] κακει διετρειβεν με[τα] [των]
[μαθητ]ων 55 η[ν] [δε] [εγγυς] [το] [πασχ]α των ιουδαιων· και [ανεβησαν]
[πολ]λοι εις [ιεροσολυμα] [εκ] [της] [χ]ωραs προ του πασχα ιν[α] [αγνισω]σιν
εαυ[του]s 56 [εζητουν] [ουν] [τον] [ιη̄] και ελεγον μετ [αλληλων] [εν] [τωι] [ιερωι]
[εστηκοτεs] [τι] [δοκει] [υμ]ιν οτι ου μη ελθ[η] [εις] [την] [εορτην] 57
[δεδωκεισαν] [δε] [οι] [αρχιερειs] και οι πρεσ[βυτεροι] –

(Деяния 4:27-36)

27 – [ε]πι τον αγιον π[αιδα] [σου] [ιη̄] [ον] [εχριστα]s [ηρωδη]s [τε] [και] [ποντιο]s
[πειλατο]s συν εθνεσιν και [ι] [λαοι]s [ισραηλ] 28 [ποιησαι] [οσα] [η] [χειρ] [σου]
[και] [η] [βουλη] [σου] προωρισεν γενεσθαι 29 κ[αι] [τα] [νυν] [κε] [επιδε] [επι]
[τα]s [απειλα]s [αυτων] [και] δοs τοις δου[λο]ι[ς] σου με[τα] [παρρησια]s [παση]s
[λαλειν] [τον] [λογον] [σου] 30 [εν] [τωι] [ε]κτεινειν την χειρα σο[υ] [ει]s [ιασιν]
[και] [σημεια] [και] [τερατα] [γινεσθαι] δια του ονοματοs του α[γιου] [παιδο]s
[σου] [ιη̄] 31 [και] [δε]θηθεντων [αυτων] εσαλευθη ο τοποσ εν ω[ι] [ησαν]
[συνηγμενοι] [και] [επλησθησαν] [απαντε]s του π̄ν̄s του αγ[ι]ου και ε[λαλουν]

[τον] [λογον] [του] [θῡ] [μετα] [παρρησιας] 32 [το]υ δε πληθους των
πισ[τευσαντων] [ην] [καρδια] [και] [ψυχη] [μια] [και] [ου]δε εις τις των
υπαρχο[ντων] [αυτωι] [ελεγεν] [ιδιον] [ειναι] [αλλ] [ην] [αυτοι]ς παντα κοινα 33
και μεγ[αλη] [δυναμει] [απεδιδουν] [το] [μαρτυριον] [οι] [α]ποστολοι της
αναστασ[εως] [του] [κῡ] [ιη̄] [χαρις] [τε] [μεγαλη] [ην] [επι] [παντας] [αυ]τους 34
ουδε γαρ ενδεη[ς] [τις] [ην] [εν] [αυτοις] [οσοι] [γαρ] [κτητορες] [χωριω]ν η
οικιων υπηρχο[ν] [πωλουντες] [εφερον] [τας] [τιμας] [των] [πιπρασκ]ομενων 35
και ετιθουν [παρα] [τους] [ποδας] [των] [αποστολων] [διεδιδετο] δε εκαστω
καθοτ[ι] [αν] [τις] [χρειαν] [ειχεν] 36 [ιωσηφ] [δε] [ο] [επικληθεις] [βαρ]ναβας
[απο] των [αποστολων] [ο] [εστιν] [μεθερμηνευομενον] [υιος] παρ[α]κ[λησεως]
[λευιτης] [κυπριος] [τωι] [γενει]

(Деяния 5:10-19)

10 – [νεκραν] [και] [εξενεγ]καντες εθαψ[αν] [προς] [τον] [ανδρα] [αυτης] 11 [και]
[εγενετο] [φοβος] [μεγας] [ε]φ ολην την εκκ[λησιαν] [και] [επι] [παντας] [τους]
[ακουοντας] [ταυτα] 12 δια δε των χειρων [των] [αποστολων] [εγινετο] [σημεια]
[και] [τερα]τα πολλα εν τωι λαω[ι] [και] [ησαν] [ομοθυμαδον] [απαντες] [εν] [τηι]
[σ]τοα σολομωντος 13 των [δε] [λοιπων] [ουδεις] [ετολμα] [κολλασθαι] [αυ]τοις
14 μαλλον δε προσε[τιθεντο] [πιστευοντες] [τωι] [κυριωι] [πληθη] [αν]δρων τε
κα[ι] γυναικω[ν] 15 [ωστε] [και] [εις] [τας] [πλατειας] [εκφερειν] [του]ς ασθενεις
και τιθена[ι] [επι] [κλιναριων] [και] [κραβαττων] [ινα] [ερχ]ομενου πετρου καν η
σ[κια] [επισκιαση] [τινι] [αυτων] 16 [συνηρχετο] [δ]ε και το πληθος των περ[ιξ]
[πολεων] [ιερουσαλημ] [φεροντες] [ασθε]νεις και οχλουμενους [υπο] [πν̄ων]
[ακαθαρτων] [οιτινες] [εθεραπευο]ντο απαντες 17 αναστας δε[ε] [ο] [αρχιερευς]
[και] [παντες] [οι] [συν] [αυτωι] [η] [ου]σα αιρεσις των σανδου[καιων]
[επλησθησαν] [ζηλου] 18 [και] [επ]εβαλον τας χειρας επι [τους] [αποστολους]
[και] [εθεντο] [αυτους] [εν] [τηρ]ησει δημοσια 19 αγγελο[ς] [δε] [κῡ] [δια]
[νυκτος] [ανοιξας] [τας] [θυρας] [τη]ς φυλακης εξαγαγω[ν] [τε] [αυτους] [ειπεν]

(Деяния 5:20-37)

20 [πορευεσθε] [και] [σταθεντες] [λα]λειτε εν [τ]ωι [ι]ερωι τ[ωι] [λαωι] [παντα]
[τα] [ρηματα] [της] [ζωης] [ταυτης] 21 [ακουσαν]τες δε εισ[ηλθον] [υπο] [τον]
[ορθρον] [εις] [το] [ιερον] [και] [εδιδασκον] [παραγ]ενο[μενος] [δε] [ο]
[αρχιερευς] [και] – 30 –

[ιη̄] [ον] [υμεις] [διεχειρισασ]θε κρεμασαν[τες] [επι] [ξυλου] 31 [τουτον] [ο] [θς]
[αρχηγον] [και] [σωτηρα] [υψωσεν] τη δεξια αυτου [του] [δουναι] [μετανοιαν]
[τωι] [ισραηλ] [και] [αφесιν] αμαρτιων 32 και ημε[ις] [εσμεν] [μαρτυρες] [των]
[ρηματων] [τουτων] και το π̄να το αγιον ο ε[δωκεν] [ο] [θς] [τοις] [πειθαρχουσιν]

[αυτωι] 33 [οι] [δε] ακουοντες διεπρειο[ντο] [και] [εβουλοντο] [ανελειν] [αυτους]
34 [αναστ]ας δε τις εν τωι συνε[δριωι] [φαρισαιος] [ονοματι] [γαμαλιηλ]
[νομοδ]ιδασκαλος τιμιος πα[ντι] [τωι] [λαωι] [εκελευσεν] [εξω] [βραχυ] [ποιησα]ι
τους ανθρωπους 35 ει[πεν] [τε] [προς] [αυτους] [ανδρες] [ισραηλιται] προσεχετε
αυτοις επι [τοις] [ανθρωποις] [τουτοις] [τι] [μελλετε] [πρα]σσειν 36 προ τουτων
τω[ν] [ημερων] [ανεστη] [θευδας] [λεγων] [ειναι] τινα εαυτον ωι προσε[κλιθη]
[ανδρων] [αριθμος] [ως] [υ] [ος] [ανηρεθη] [και] παντες οσοι επειθ[οντο] [αυτωι]
[διελυθησαν] [και] [εγενοντο] [εις] [ου]δεν 37 μετα τουτον αν[εστη] [ιουδας] [ο]
[γαλιλαιος] [εν] [ταις] [ημεραις] [της] απογραφης και απεστησεν [λαον] [ικανον]
[οπισω] [αυτου] [κακει]νος απωλετο και οσοι [επειθοντο] [αυτωι]
[διεσκορπισθησαν]

(Деяния 5:38-39)

38 [και] [τα] [νυ]ν λεγω υμιν αποστη[τε] [απο] [των] [ανθρωπων] [τουτων] [και]
[αφετε] [αυτο]υ[ς] οτι εαν η η βουλ[η] [αυτη] [εξ] [ανθρωπων] [η] [το] [εργον]
[τουτο] [καταλ]υθηετ[αι] 39 [ει] [δ]ε εκ [θυ] [εστιν] [ου] [δυνησεσθε] [καταλυσαι]
[αυτους] μη[ποτε] [και] [θεομαχοι] [ευρεθητε] [επεισθησαν] –

(Деяния 6:7-15)

7 – [θυ] [ηυξανεν] [και] [επληθυν]ετο ο αριθμος τω[ν] [μαθητων] [εν]
[ιερουσαλημ] [σφοδρα] [πολυς] [τε] [ο]χλος των ιερεων υπ[ηκουον] [τηι] [πιστει]
8 [στεφανος] [δε] [πληρης] [χαρ]ιτος και δυναμεως ε[ποιει] [τερατα] [και]
[σημεια] [μεγαλα] [εν] [τωι] [λαωι] 9 [αν]εστησαν δε τινες τω[ν] [εκ] [της]
[συναγωγης] [της] [λεγομενης] ·[λιβ]ερτεινων και κυρην[αιων] [και]
[αλεξανδρεων] [και] [των] [απο] [κιλικιας] και ·[ασιας] συνζητουντ[ες] [τωι]
[στεφανωι] 10 [και] [ουκ] [ισχυον] [αντιστηνα]ι τη σοφια και τωι πν̄[ι] [ωι]
[ελαλει] 11 [τοτε] [υπεβαλον] [ανδρας] [λεγοντας] [ο]τι ακηκοαμεν αυτου
[λαλουντος] [ρηματα] [βλασφημα] [εις] [μωυσην] και τον ·θν̄ 12 συνεκεινη[σαν]
[τε] [τον] [λαον] [και] [τους] [πρεσβυτερους] [και] [το]υς ·γραμματαις και
επ[ισταντες] [συνηρπασαν] [αυτον] [και] [ηγαγον] [εις] το συνεδριον 13 εστησ[αν]
[τε] [μαρτυρας] [ψευδεις] [λεγοντας] [ο] [ανθρωπος] ουτος ου παυεται λαλων
[ρηματα] [κατα] [του] [τοπου] [του] [αγιου] [και] [του] [νομου] 14 ακηκοαμεν γαρ
αυ[τ]ου [λεγοντος] [οτι] [ιη] [ο] [ναζωραιος] [ουτος] [καταλυσει] τον τοπον
τουτον κα[ι] α[λλαξει] [τα] [εθη] [α] [παρεδωκεν] [ημιν] [μωυσης] 15 [κ]αι
ατενισαντες εις αυ[τον] [παντες] [οι] [καθεζομενοι] [εν] [τωι] [συνεδριωι] [ειδον]
[το] προσωπον αυτου ω[σει] [προσωπον] [αγγελου]

(Деяния 7:1-17)

1 [ειπεν] [δε] [ο] [αρχιερευς] [ει] [τα]υτα [ουτως] εχει 2 ο [δε] [εφη] [ανδρες] [αδελφοι] [και] [πατερες] [ακουσατε] [ο] [θς] [της] [δο]ξη[ς] [ωφθη] [τωι] [πατρι] [ημων] – 10 –

[κατεστησεν] [αυτον] [ηγουμενο]ν επ αιγυπτον κ[αι] [εφ] [ολον] [τον] [οικον] [αυτου] 11 [ηλθεν] [δε] [λιμος] [εφ] [ολην] [την] αιγυπτον και χα[νααν] [και] [θλιψις] [μεγαλη] [και] [ουχ] [ηυρισκον] [χορτα]σματα οι πς̄ ημων 12 α[κουσας] [δε] [ιακωβ] [οντα] [σιτια] [εις] [αιγυπτον] εξαπεστειλεν τον π[ρα] [ημων] [πρωτον] 13 [και] [εν] [τωι] [δευτερωι] [ανεγνω]ρισθη ιωσηφ τοις αδελ[φοις] [αυτου] [και] [φανερων] [εγενετο] [τωι] [φαραωι] [το] [γενος] του ιωσηφ 14 αποστ[ειλας] [δε] [ιωσηφ] [μετεκαλεσατο] [τον] [π[ρα] [αυτου] [ιακωβ] και πασαν την συγγ[ενειαν] [εν] [ψυχαις] [οε] 15 [και] [κατεβη] [ιακωβ] [εις] [αιγυ]πτον και ετελευτησεν αυ[τος] [και] [οι] [πς̄] [ημων] 16 [και] [μετετεθησαν] [εις] [συχ]εμ και ετεθησαν εν τωι [μνηματι] [ωι] [ωνησα] [το] [αβρααμ] [τιμης] [αρ]γυριου παρα των υιων εμ[μωρ] [εν] [συχεμ] 17 [καθως] [δε] [ηγγιζεν] [ο] [χρονος] [της] επαγγελιας ης επηγγ[ειλατο] [ο] [θς] [τωι] [αβρααμ] [ηυξησεν] [ο] [λαος] [και] [επλη]θυνθη εν αιγυπτωι

(Деяния 7:18-37)

18 αχ[ρι] [ου] [ανεστη] [βασιλευς] [ετερος] [ος] [ουκ] [ηδει] [τον] ·[ι]ωσηφ 19 ουτος κατασοφισα[μενος] [το] [γενος] [ημων] [εκακωσεν] [τους] [πς̄] [ημων] [του] [π]οιειν εκθετα τα βρε[φη] [αυτων] [εις] [το] [μη] [ζωογονεισθαι] 20 [εν] [ωι] [καιρωι] [εγε]ννηθη.μουσης.κα[ι] [ην] [αστειος] [τωι] [θω] [ος] [ανετραφη] [μηνας] [τρε]ις εν τ[ωι] [οικωι] του [πς̄] 21 [εκτεθεντος] [δε] [αυτου] [ανειλατο] [αυτον] [η] [θυγατηρ] [φαρ]αω κα[ι] [ανεθρεψατο] [αυτον] [εαυτηι] [εις] [υιον] 32 – [γενο]μενος [μωσης] [ουκ] [ετολμα] [κα]τανοησαι 33 ειπεν δε [αυτωι] [ο] [κς̄] [λυσον] [το] [υποδημα] [των] [ποδων] [σου] [ο] [γαρ] [τοπος] εφ ω εστηκας γη αγι[α] [εστιν] 34 [ιδων] [ειδον] [την] [κακωσιν] [του] [λαου] [μου] [το]ν εν αιγυπτωι και του [στεναγμου] [αυτων] [ηκουσα] [και] [κατεβην] [εξελεσ]θαι αυτους και δευρο απ[οστειλω] [σε] [εις] [αιγυπτον] 35 [τουτον] [τον] [μωσην] ον ηρνησαντο ειπον[τες] [τις] [σε] [κατεστησεν] [αρχοντα] [και] [δικαστ]ην τουτον ο θς̄ αρχοντ[α] [και] [λυτρωτην] [απεσταλκεν] [συν] [χειρι] [αγγελ]ου του οφθεντος αυτωι [εν] [τηι] [βατωι] 36 [ουτος] [εξηγαγεν] [αυτους] [ποιησα]ς τερατα και σημεια εν [γηι] [αιγυπτωι] [και] [εν] [ερυθρα] [θαλασσηι] [και] [ε]ν.τηι ερημωι ετη μ̄ 37 ουτ[ος] [εστιν] [ο] [μωσης] [ο] [ειπας] [τοις] [υιοις] [ισραηλ] προφητην υμιν ανασ[τησει] [ο] [θεος] [εκ] [των] [αδελφων] [υμων] [ως] [εμ]ε

(Деяния 7:38-57)

38 ουτος εστιν ο γενομε[νος] [εν] [τηι] [εκκλησια] [εν] [τηι] [ερημωι] [μετα] του
αγγελου του λαλουν[τος] [αυτωι] [εν] [τωι] [ορει] [σινα] [και] [των] [πατερων]
ημων ος εδεξατο λογια [ζωντα] [δουναι] [ημιν] 39 [ωι] [ουκ] [ηθελησαν]
[υπ]ηκοοι γενεσθαι οι πατερ[ες] [ημων] [αλλα] [απωσαντο] [και] [εστραφησαν]
[ει]ς α[ι]γυ[π]τ[ο]ν εν ταις καρδιαις [αυτων] 40 [ειποντες] [τωι] [ααρων]
[ποιησον] [ημιν] [θεους] οι προπορευσονται [ημων] [ο] [γαρ] [μωση] [ουτος] [ος]
[εξηγαγεν] [ημας] [εκ] [γης] [α]ιγυπτ[ου] [ου]κ οίδαμ[εν] [τι] [εγενετο] [αυτωι] 41
[και] [εμοσχοποιησαν] [εν] [ταις] [ημεραις] [εκειναις] [και] [ανη]γαγον [θυσιαν]
[τωι] [ειδωλωι] [και] – 52 – [απε

κτειναν] [τους] [προκαταγγ]ειλαντας περι [της] [ελευσεως] [του] [δικαιου] [ου]
[νυν] [υμεις] [προδοτα]ι και φονεις εγενεσθ[ε] 53 [οιτινες] [ελαβετε] [τον] [νομον]
[εις] [διαταγας] αγγελων και ουκ ε[φυλαξατε] 54 [ακουοντες] [δε] [ταυτα]
[διεπριον]το ταις καρδιαις αυτ[ων] [και] [εβρυχον] [τους] [οδοντας] [επ] [αυτον]
55 [υπ]αρχων δε πληρης πιστεως [και] [πν̄ς] [αγιου] [ατενισας] [εις] [τον]
[ουρ]ανον ειδεν δοξαν θ[υ] [και] [ιη̄] [εστωτα] [εκ] [δεξιων] [του] [θυ] 56 [και]
[ειπεν] ιδου θεωρω τους ουρα[νους] [διηνοιγμενους] [και] [τον] [υιον] [του]
[αν]θρωπου εστωτα εκ δεξ[ιων] [του] [θυ] 57 [κραξαντες] [δε] [φωνηι] [μεγαληι]
συνεσχον τα ωτα αυ[των] [και] [ωρμησαν] [ομοθυμαδον] [ε]π αυτον

(Деяния 7:58-60)

58 κα[ι] εκβαλου[τες] [εξω] [της] [πολεως] [ελιθοβολουν] [οι] δε μαρτυρες
απεθεν[το] [τα] [ιματια] [παρα] [τους] [ποδας] [νεανιου] [καλου]μενου σαουλ 59
και ελι[θοβολουν] [τον] [στεφανον] [επικαλουμενο]ν και λεγοντα κῡ ιη̄.δ[εξαι]
[το] [πν̄α] [μου] 60 [θεις] [δε] [τα] [γονατα] [εκραξε]ν φωνη μεγαλη [κε] [μη]
[στησης] [αυτοις] [ταυτην] [την] [αμ]α[ρ]τιαν και ταυτα ει[πων] [εκοιμηθη]

(Деяния 8:1-22)

1 [σαυλος] [δε] [ην] [συνευδοκων] [τηι] [αναι]ρεσει ·αυτου εγενε[το] [δε] [εν]
[εκεινηι] [τηι] [ημερα] [διωγμος] [μεγας] [επι] την εκκλησιαν τ[ην] [εν]
[ιεροσολυμοις] [παντες] [δε] [διεσπαρησ]αν κατα τας χωρα[ς] [της] [ιουδαιας]
[και] [σαμαρειας] – 14 – [ιεροσο

λυμοις] [αποστολοι] [οτι] δεδεκται η σαμ[α]ρεια [τον] [λογον] [του] [θυ]
[απεστειλαν] [προς] [αυτο]υς πετρον και ιωαννην 15 [οιτινες] [καταβαντες]
[προσηυξαντο] [περι] [α]υτων οπως λαβωσι πν̄α α[γιον] 16 [ουδεπω] [γαρ] [ην]
[επ] [ουδενι] [αυτων] [επι]πεπτωκος μονον δε βεβ[α]πτισμενοι [υπηρχον] [εις] [το]

[ονομα] [του] [κῡ] [ιη̄] χῡ 17 τοτε επιτιθουν αυτοις [τας] [χειρας] [και]
[ελαμβανον] [πνᾱ] [αγιον] 18 [ιδ̄]ων δε ο σιμων οτι δια της [επιθεσεως] [των]
[χειρων] [των] [αποστολων] διδοται το πνᾱ το αγιον προσηνεγκεν [αυτοις]
[χρηματα] 19 [λεγων] [δοτε] καμοι την εξουσιαν ταυτην [ινα] [ωι] [εαν] [επιθω]
[τας] [χειρας] [λαμβανη] π[ν]ᾱ αγιον 20 πετρος δε ειπ[εν] [προς] [αυτον] [το]
[αργυριον] [σου] [συν] [σοι] [ειη] [εις] απωλειαν οτι την δωρ[εαν] [του] [θῡ]
[ενομισας] [δια] [χρηματων] [κτασθ]αι 21 ουκ εστιν σοι μερις ουδ[ε] [κληρος] [εν]
[τωι] [λογωι] [τουτωι] [η] [γαρ] [καρδια] [σο]υ ουκ εστιν ευθεια εναν[τι] [του]
[θῡ] 22 [μετανοησον] [ουν] [απο] [της] [κακιας] [σου] ταυτης και δεηθητ[ι] [του]
[κῡ] [ει] [αρα] [αφεθησεται] [σοι] [η] [επινοια] [της] [καρδιας] σου

(Деяния 8:23-40)

23 εις γαρ χολην π[ικριας] [και] [συνδεσμον] [αδικιας] [ορω] [σε] [οντα] 24
αποκριθεις δε ο σιμων [ειπεν] [δεηθητε] [υμεις] [υπερ] [εμου] [προς] [τον] [κν̄]
οπως μη[δ]ε εν [επελθη] [επ] [εμε] [ων] [ειρηκατε] 25 [οι] [μεν] [ουν]
[διαμαρτυραμ]ενοι και λ[αλησαντες] [τον] [λογον] – 34 –

[σου] [περι] [τινος] [ο] προφητης λεγει τ[ουτο] [περι] [εαυτου] [η] [περι] [ετερου]
[τινος] 35 [ανοιξας] [δε] [ο] φιλιππος το στομα αυτου κ[αι] [αρξαμενος] [απο]
[της] [γραφης] [ταυτης] [ευηγγ]ελισατο αυτω[ι] τον ιη̄ 36 ως δε [ε] [επορευ]οντο
[κατα] [την] [οδον] [ηλθον] [επ]ι τι υδωρ και φησιν ο ευνου[χος] τι κω[λυει] [με]
[βαπτισθηναι] 38 [και] [εκ]ελευσεν στηναι το αρμα και κατεβη[σαν] [αμφοτεροι]
[εις] [το] [υδωρ] [ο] τε φιλιππος και ο ευνουχος κ[α]ι εβα[πτισεν] [αυτον] 39 [οτε]
[δε] [ανεβη]σαν εκ του υδατος πνᾱ κῡ [ηρπα]σεν [τον] [φιλιππον] [και] [ουκ]
[ειδεν] [αυ]τον ουκετι ο ευνουχος [επορευετο] [γαρ] [την] [οδον] [αυτου]
[χαιρων] 40 [φιλιπ]πος δε ευρεθη εις αζωτον [και] [δι]ερχ[ομενος] [ευηγγελιζετο]
[τας] [πο]λεις πασας εως του ελθε[ιν] [αυτον] [εις] [καισαρειαν]

(Деяния 9:1-17)

1 [ο] [δε] [σαυλος] [ετι] [εμ]πνεων απειλης και φ[ονου] [εις] [τους] [μαθητας]
[του] [κῡ] [προσελθων] [τωι] αρχιερει 2 ητησατο π[αρ] [αυτου] [επιστολας] [εις]
[δαμασκον] [προς] [τας] [συν]αγωγας οπως εαν τι[νας] [ευρη] [της] [οδου] [οντας]
[ανδρας] [τε] [και] [γυν]αικας δεδεμενους [αγαγη] [εις] [ιερουσαλημ] 3 [εν] [δε]
[τωι] [πορευε]σθαι εγενετο αυτον εγγιζειν [τηι] [δαμασκωι] [εξαιφνης] [τε]
[περιηστραψ]εν αυτον φως απο του [ουρανου] 4 [και] [πεσων] [επι] [την] [γην]
ηκουσεν [φων]ην λεγ[ου]σ[α]ν αυ[τωι] [σαουλ] [σαουλ] [τι] [με] [διωκεις] 5
[ειπεν] [δε] [τις] [ει] [κε̄] [ο] δε εγω [ειμι] [ιη̄] [ον] [συ] [διωκεις] 6 [αλλα]
[αναστηθι] [και] [εισελθε] [εις] [την] π[ολιν] [και] [λαληθησεται] [σοι] [ο] [τι] [σε]

[δει] [ποιειν] 7 [οι] [δε] [ανδρες] [οι] [συ]νοδ[ευοντες] [αυτωι] [ειστηκεισαν]
[ενεοι] [ακουοντες] – 15 –

[ισραηλ] 16 [εγω] [γαρ] [επιδειξω] αυτωι οσα δει αυ[τον] [υπερ] [του] [ονοματος]
[μου] [παθ]ει[ν] 17 [απη]λθεν δε ανανιας και εισ[ηλθεν] [εις] [την] [οικιαν] [κα]ι
επιθεις [τ]ας χειρας επ' αυτον ειπεν σα[ουλ] [αδελφε] [ο] [κς] [απεστ]αλκε[ν] με. ιη
ο οφθεις σοι εν τη οδ[ωι] [η] [ηρχου] [οπως] [αναβλεψης] [και] πλησθης πν̄ς
·αγιου

(Деяния 9:18-27)

18 και ευθεως απεπ[εσαν] [αυτου] [απο] [των] [ο]φθαλμων ως ·λεπιδες και
·ανεβλεψεν αν[αστας] [δε] [εβαπτισθη] 19 [και] λαβων τροφην ·ενισχυσθη
εγενε[το] [δε] [μετα] [των] [εν] [δαμασκ]ωι [μαθητω]ν ημερας ικανας 20 και
ε[υθεως] [εν] [ταις] [συναγωγα]ς εκη[ρυσσε]ν τον ιη̄ οτι ουτος εστιν [ο] [υς] [του]
[θυ] 21 [εξιςταντο] [δε] [παντες] [και] [ελεγο]ν ουχ ουτος εστιν ο πορθ[ησας] [εις]
[ιερουσαλημ] [τους] [επικα]λο[υ]μενους το ονομα τουτο κ[αι] [ωδε] [εις] [τουτο]
[εληλυθει] [ινα] [δεδεμεν]ους αυτους αναγαγη επ[ι] [τους] [αρχιερεις] 22 [σαυλος]
[δε] [μαλλον] [ενεδυν]αμουτο και συνεχυνε[ν] [τους] [ιουδαιους] [τους]
[κατοικουντας] [εν] [δαμα]σκωι συμβιβαζων ο[τι] [ουτος] [εστιν] [ο] [χς] 23 [ως]
[δε] [επληρουντο] [ημερα]ι ικανα[ι] συνεβουλε[υσαντο] [οι] [ιουδαιοι] [ανελειν]
[αυτον] 24 [εγνωσθη] [δε] τωι σαουλ η επιβου[λη] [αυτων] [παρετηρουντο] [δε]
[και] [τας] [πυλας] [ημερας] [τε] [κ]αι νυκτος οπως [αυτον] [ανελωσιν] 25
[λαβοντες] [δε] [οι] [μαθηται] [αυτου] [νυκτος] [καθηκαν] αυτον [δια] [του]
[τειχους] [χαλασαντες] [εν] [σπυριδι] 26 [παραγενομενος] [δε] [εις] ιερο[υσαλημ]
[επειραζεν] [κολλασθαι] [τοις] [μαθηταις] [και] [παντες] εφοβο[ουντο] [αυτον] [μη]
[πιστευοντες] [οτι] [εστιν] [μαθητης] 27 [βαρναβα]ς δε [επιλαβομενος]

(Деяния 9:35-43)

35 – [λυνδαν] [κ]αι τον σαρωναν οιτι[νες] [επεσ]τρεψαν επ[ι] [τον] [κν̄] 36 [εν]
[ιοππη] [δε] [τις] [ην] μαθητρια ονοματι ταβειθα η διερμην[ευομενη] [λεγεται]
[δορκ]ας αυτη ην πληρης εργαων αγαθων και ελεημ[οσυνων] [ων] [εποιει] 37
εγενετο δε εν ταις ημεραις εκειναις ασθε[νησασαν] [αυτην] [απο]θανειν λουσαντες
δε αυτην εθηκαν εν υπε[ρωι] 38 [εγγυς] [δε] [ουσης] [λ]υνδα τη ·ιοππη οι
μαθηται ακουσαντες οτι.π[ετρος] [εστιν] [εν] [α]υτηι απεστειλαν δυο ανδρας
[π]ρος αυτον παρακ[αλουντες] [μη] [οκ]νησαι διελθειν εως ·αυτων 39 αναστας δε
πε[τρος] [συνηλθεν] [αυτοις] ον παραγενομενον ηγαγον. ει[ς] το ·υπερων και
πα[ρεστησαν] [αυτω]ι πασαι αι χηραι κλαιουσαι και επιδεικνυμεν[αι] [χιτωνας]
[και] [ιματ]ια οσα εποιησεν αυταις. μετ. α[υτ]ων ουσα η δορκ[ας] 40 [εκβαλων]
[δε] [εξω] [1-3]ρος παντας ο πετρος κα[ι] [θεις] [τα] γονα προσηυ[ξατο] [και]

[θεις] [τα] [γον]ατα προσηυξατο και επιστ[ρεψας] προς το σωμα [ειπεν] [ταβειθα]
[αν]αστηθι η δε ηνοιξεν [τους] [οφθαλ]μους αυτη[ς] [και] [ιδουσα] [τον] [πετρο]ν
αγεκαθισεν 41 δους δε [αυτη] [χ]ειρα ανεστη[σεν] [αυτην] [και] [φωνη]σας τας
χηρας και τους [αγιους] [παρ]εστησεν [αυτην] [ζωσαν] 42 [γνωστον] δε εγενετο
καθ.ολ[ης] [της] [ιοππης] [και] [επιστευσαν] [πολλοι] [επι] [τον] [κ]̄ 43 εγε[νετο]
[δε] [ημερας] [ικανας] [μειναι] [εν] [ιοππη] [παρα] [τινι] [σιμ]̄ωνι βυ[ρσει]

(Деяния 10:1-17)

1 [ανηρ] [δε] [τις] [εν] [καισαρεια] [ονοματι] [κορ]νηλ[ιος] [εκατονταρχης] [εκ]
[σπειρης] [της] [καλουμενης] [ιταλικη]ς 2 ευσ[εβης] [και] [φοβουμενος] [τον] [θ̄ν̄]
[συν] [παντι] [τωι] – 10 –

[παρασκευαζ]οντων δε αυτω[ν] ηλθεν επ αυτον εκστα[σις] 11 [και] [θεωρει] [τον]
[ουρανον] ανεωγμενον και τεσσαρσιν αρχαις δεδ[εμενον] [σκευος] [τι]
[καθιε]μεγον επι της γης 12 εν ωι υπηρχεν παντα τ[α] [τετραποδα] [και] [ερπετα]
της γης και πετεινα του ουρανου 13 και εγενετο φ[ωνη] [προς] [αυτον] [ανασ]τας
θυσον και φαγε 14 ο δε πετρος ειπεν μηδα[μω]ς [κε̄] [οτι] [ουδε]ποτε εφαγον παν
κοινων και ακαθαρτον 15 και φω[νη] [παλιν] [εκ] [δευτε]ρ[ο]ν προς αυτον α ο θ̄ς
εκαθαρισεν συ μη κοινου 16 τ[ουτο] [δε] [εγενετο] [επι] [τρις] και ανελημ[φθ]η το
σκευος εις τον ουρανον 17 [ως] [δε] [εν] [εαυτωι] [διηπορει] [ο] [πετ]ρος τι αν ειη
το οραμα ο ειδεν ιδου οι ανδρες ο[ι] [απεσταλμενοι] [υπο] [του] [κ]ορνηλιου
διε[ρ]ωτησαντες την οικιαν του σι[μ]ωνος [επεστησα]ν επι τον πυλωνα

(Деяния 10:18-34)

18 και φωνησαντες επυνθα[νοντο] [ει] [σιμων] [ο] επικαλουμε[ν]ος πετρος ενθαδε
ξενιζεται 19 τ[ου] [δε] [πετρου] [διε]γθυμουμε[ν]ου πε[ρι] [του] οραματος ειπεν
αυτωι το [π̄να] [ιδου] [ανδρες] [τρεις] [ζητο]υσιν σε 20 αλλα [αναστα]ς καταβηθι
συν αυτοις κα[ι] [πορευου] [μηδεν] [δια]κρεινομενος [οτι] [εγω] [α]πεσταλκα
αυτους 21 καταβας [δε] [πετρος] [προς] [τους] [α]νδρας [ειπεν] [εγω] [ει]μι ον
ζητειτε τις η αι[τια] [δι] [ην] [παρεστε] 22 [οι] [δε] [ειπαν] [κορνηλιος]
[εκατονταρ]χης ανηρ δικαιο[ς] [και] [φοβουμενος] [τον] [θ̄ν̄] [μαρτυρουμενος] [τε]
[υπο] [ο]λου του εθνους τ[ων] [ιουδαιων] [εχρηματισθη] [υπο] [αγγελου] [αγιου]
[μεταπεμψασθαι] σε [εις] [τον] [οικον] [αυτου] [και] [ακουσαι] [ρηματα] [παρα]
[σου] 23 [εισ]κα[λε]σ[αμ]ενος ο[υν] [αυτους] [εξενισεν] [τη] [δε] [επαυριον]
[αναστας] [εξηλθεν] [συν] [α]υτο[ις] [και] [τινες] – 31 –

[κορνηλιε] [ει]σηκουσθη σου η ευχ[η] [κα]ι αι ελεμη[ο]σ[υναι] [σου]
[εμνησθησαν] [ενω]π[ι]ον του θ̄ 32 πεμψον ουν εις ιοππην και [μετακαλεσαι]
[σιμωνα] [ο]ς επικαλειται πετρος ουτος εν οικια σιμω[νος] [βυρσεως] [ξενιζεται]

παρα θαλασσαν 33 εξαυτης ουν επεμψα π[ρο]ς [σε] [συ] [τε] [καλω]ς [εποησ]ας
παραγενομενος νυν ουν ημεις παρε[σμεν] [ενωπιον] [του] [θυ] [ακου]σαι παντα τα
προ[σ]τεταγμενα σοι απο του κυ 34 [ανοιξας] [δε] [το] [στομα] πετρος ειπεν επ
αληθειας καταλαμβα[ν]ο[μαι] [οτι] [ουκ] [εστιν] [προσω]πολημπτης ο ·θς

(Деяния 10:35-41)

35 αλλ εν [π]αντι εθνει ο φο[βου]μενος [αυτον] [και] [εργα]ζομενος δικαιοσυνην
δεκτος αυτωι εσ[τιν] 36 [τον] [λογον] [ον] [απεστε]ιλεν τοις υιοις ισραηλ
ευαγγελιζομενο[ς] [ειρηνην] [δια] [ιη] [χρ] [ουτος] εστιν παντων κς 37 υμεις
οιδατε το γενο[μενον] [ρημα] [καθ] [ολης] [της] [ιου]δαιας αρξαμενον.α[πο] [της]
γα[λ]ιλαιας με[τα] [το] [βαπτισμα] [ο] [εκηρυξ]εν ιωαννης 38 ιη τον α[πο]
ναζα[ρ]εθ.ως εχρε[ισεν] [αυτον] [ο] [θς] [πνι] [αγι]ωι και δυναμει ος περ[ιη]θεν
ευεργετω[ν] [και] [ιω]μενος [παντα]ς τους κατα[δ]υναστ[ευο]μενου[ς] [υ]πο [του]
[διαβολου] [οτι] [ο] [θς] [ην] [μετ] [αυτω]ν 39 και ημεις με[ν] [μαρτυρες] ων
επ[οη]σεν [εν] [τε] [τηι] [χωρα] [των] .ιουδαι[ων] [ον] [και] [ανειλαν]
[κρεμα]σαντες [επι] [ξυλου] 40 [τουτον] [ο] [θς] ηγειρ[εν] [εν] [τηι] [τριτηι]
[ημερα] [και] [εδωκεν] [αυτον] [εμφανη] [γενεσθαι] 41 [ου] [π]αντ[ι] [τωι] [λαωι]
[αλλα] [μαρτυσιν] [τοις] [προκεχειροτονημενοις] [υπο] [του] [θ]υ ημ[ιν] [οιτινες]
[συνεφαγομεν] [και] [συνεπιομεν] [αυτωι] [μετα] [το] –

(Деяния 11:2-11)

2 – [ανεβη] [πετρος] [εις] [ιερουσα]λημ διεκρεινον[το] [προς] [αυτον] [οι] [εκ]
[περιτο]μης 3 λεγοντες εισηλθεν προς ανδρας.α[κρο]βυστιαν [εχοντας] [και]
[σ]υνεφαγεν αυτοις 4 αρξαμενος δε πετρος εξετιθετο [αυτοις] [καθ]εξης λεγων 5
εγω ημην εν πολει ιοππη προσ[ευ]χομενος [και] [ειδον] εν εκστασει οραμα
καταβαινον σκευος τ[ι] [ως] [οθονην] [μεγαλ]ην τεσσαρσιν αρχαις καθεμιμενον εκ
του ου[ρανου] [και] [η]θεν [αχ]ρις εμου 6 εις ην ατενισας κατενοουν και ειδον
[τα] [τετραποδα] [της] [γης] και τα θηρια και τ[α] ερπετα και τα πετεινα [του]
[ουρανου] 7 [ηκουσα] [δε] [κ]αι φωνην λεγουσαν μοι αναστας πετρε θ[υ]σον [και]
[φαγε] 8 [ειπον] [δε] μηδαμως κε̄ οτι κοινον η ακαθαρτον ουδ[ε]ποτε [εισηλθεν]
[εις] το στομα 9 απεκριθη δε φωνη εκ δευτερου εκ [του] [ουρανου] [α] [ο] [θς]
[εκαθ]αρισεν συ μη κοι[νου] 10 τουτο εγενετο επι τρ[ις] [και] [ανεσπασθη] [παλιν]
απαντα εις τον ουρανον 11 και ιδου εξαυτη[ς] [τρεις] [ανδρες] [επεστ]ησαν μοι επι
τη[ν] [οι]κιαν [εν] [η]ι ημην.απ[ε]σταλμενοι [απο] [καισαρεια]ς προς [με]

(Деяния 11:12-29)

12 [ειπεν] [δε] το π̄να [μ]ο[ι] συγελθειν [αυτοις] [η]θεν [δε] [συν] [εμ]οι και
[οι] [εξ] [αδελφοι] ουτοι και εισηλθομ[εν] [εις] [τον] [οικον] [του] [ανδρος] 13
[απηγγειλεν] [δε] [ημιν] πως ειδεν αγγελ[ον] [εν] [τωι] [οικωι] [αυτου] [σταθεντα]

[και] [ειποντα] [αποστειλον] [εις] [ιοππην] [και] [μεταπεμψαι] [σιμωνα] [τον]
[επικαλουμενον] πετρον 14 ος λαλησε[ι] [ρηματα] [προς] [σε] [εν] [οις] [σωθηση]
[συ] [και] [πας] [ο] [οικος] [σου] 15 [εν] [δε] [τωι] αρ[ξασθαι] [με] [λαλειν] – 24 –

[ικανος] [τωι] κω̄ 25 εξηλθεν δε εις ταρσον αναζητησαι σ[αουλ] 26 [και] [ευρων]
[ηγ]αγεν εις αντιοχειαν εγενετ[ο] [δ]ε αυτοις ενια[υτον] [ολον] [συναχθηναι] [ε]ν
τη εκκλησiai και διδαξα[ι] οχλον ικανο[ν] [χρηματισαι] [τε] [πρ]ωτως τους
μαθητας εν αντι[οχ]εια χνους 27 εν [ταυταις] [δε] [ταις] [ημερ]αις κατηλθον απο
ιεροσολυμων προφηται ε[ις] [αντιοχειαν] 28 [αναστ]ας δε εις εξ αυτων [ονο]ματι
[αγ]αβος εσημα[νεν] [δια] [του] [πν̄ς] [λ]ειμον μεγαλην [ε]σε[σθ]αι εφ ο[λη]ν την
οικου[μενην] [ητις] [εγεν]ετο επι κλαυδιου 29 των δε [μαθη]των καθως
[ευπορειτο] [τις] [εκαστ]ος ωρισαν εις διακονιαν πε[μψαι] [τοις] [κατοικουσιν]
[εν] [τηι] [ιουδαια] [α]δελφοις

(Деяния 11:30)

30 οι και εποησαν απο[στειλα]ντες [πρ]ο[ς] [τους] [πρεσβυτερους] [δι]α χειρος
βαρναβα και σ[αου]λ

(Деяния 12:1-16)

1 [κατ] [εκεινον] [δε] [τον] [καιρον] [επεβαλ]εν ηρωδης ο βασιλευς [τα]ς χ[ειρας]
[κ]ακ[ωσαι] [τινας] [των] [απο] [της] [ε]κκλησιας 2 ανειλεν δε [ια]κωβ[ον] [τον]
[αδελφον] [ιωαννου] [μαχαιρη] 3 [ι]δων δε οτι αρεστον ε[στιν] [τοις] [ιουδαιοις]
[προσεθετο] [συλλαβειν] [κ]αι πετρον ησαν δε η[μεραι] [των] [αζυμων] 4 [ον]
[και] [πιασας] [εθετο] [εν] [φ]υλακηι παραδους τε[σσαρσιν] [τετραδιοις]
[στρατιωτων] [φυλασσειν] [αυτον] [βο]υλομενος μετα το [πασχα] [αναγαγειν]
[αυτον] [τωι] [λαωι] 5 [ο] [μεν] [ουν] [π]ετρος ετηρε[ιτο] εν τη[ι] [φυλακηι]
[προσευχη] [δε] [ην] [εκτενως] [γινομενη] [υ]πο τ[ης] [εκκλ]ησια[ς] [προς] [τον]
[θν̄] [περι] [αυτου] 6 [οτε] [δε] [ημελλεν] [4-6α]γε[ιν] [αυτον] [ο] η[ρ]ω[δης] [τηι]
[νυκτι] [εκεινηι] [ην] [ο] – 13 – [προσηλ

θεν] [παι]δ[ι]σκη υπακ[ου]σαι ονοματι ροδη 14 και επιγνουσ[α] [την] [φωνην]
[του] [πετρου] [απο] [της] χαρας ουκ ην[ο]ιξε τον [π]υλωνα εισδραμουσα [δε]
[απηγγειλεν] [ε]σταναι τον πετρον προ του πυλωνος 15 οι δε ειπον [προς] [αυτην]
[μαινη] η δε δισχυρι[ζ]ετο ουτω[ς] εχειν οι δε ελεγον αγ[γελος] [εστιν] [αυτο]ν 16
ο δε πετρος ε[π]εμενε κρ[ο]υων ανοιξαντες δ[ε] [ειδαν] [αυτον] [και] [ε]ξεστησαν

(Деяния 12:17-23)

17 κ[α]τασεισα[ς] δε αυτοις τη χειρι σειγα[ν] [διηγησατο] [πως] [ο] [κ]ς̄ αυτον
εξη[γ]αγεν εκ [τ]ης φυλακης ειπεν τε α[παγγειλατε] [ιακωβωι] [κ]αι τ[ο]ι[ς]

αδε[λ]φοις τα[υτ]α και εξελθων επορευ[θη] [εις] [ετερον] [τοπον] 18 [γ]ενομεν[ης]
δε ημερας ην ταραχος ουκ ολιγ[ος] [εν] [τοις] [στρατιωταις] [τι] [αρα] [ο] [πετρος]
εγενετο 19 ηρωδης δε επιζητησ[ας] [αυτον] [και] [μη] [ευρων] αγακ[ρι]νας τους
φυλακας εκελευσεν α[παχθηναι] [και] [κατελθ]ων α[πο] [της] ιουδαιας εις
καισαρειαν διετρ[ειβεν] 20 [ην] [δε] [θυμομαχων] [τυριοις] [και] [σ]ειδωνιοις και
ομοθυμα[δον] [παρησαν] [προς] [αυτον] [και] [πεισαντες] [βλα]στον τον επι του
κοιτωνο[ς] [του] [βασιλεως] [ητουντο] [ειρηνην] [δια] [το] [τρεφ]εσθαι αυτων την
χωραν [απο] [της] [βασιλικης] 21 [τακτη] [δε] [ημερα] [ο] [ηρωδ]ης ενδυσαμενος
αισθη[τα] [βασιλικην] [και] [καθισας] [επι] [του] [βηματος] [εδ]ημηγ[ορ]ει προς
α[υτους] 22 [ο] [δε] [δημος] [επεφωνει] [θυ] [φωνη] [και] [ουκ] [α]νθρω[που] 23
[παρ]α[χρημα] [δε] [επαταξεν] [αυτον] [αγγελος] [κυ] [ανθ] [ων] [ουκ] εδ[ωκεν]
[την] δο[ξαν] [τωι] [θω] [και] [γενομενος] –

(Деяния 13:6-15)

6 – [μαγον] [ψευ]δοπροφητην ιουδα[ιο]ν ονοματι βαρι[η]σου[1] 7 [ος] [ην] [συν]
[τωι] [ανθυπατ]ωι σεργιωι παυλω αν[δ]ρι. συνετω ουτος προσ[καλεσαμενος]
[βαρναβ]αυ και σαουλ επεζητησεν ακουσαι τον λογον του [θυ] 8 [ανθιστατο] [δε]
[αυτ]οις ελυμας ο μαγος ουτως γαρ μεθερμηνευεται [το] [ονομα] [αυτου] [ζη]των
διαστρεψαι τον ανθυπατον απο της πιστ[εως] 9 [σαυλος] [δε] [ο] [κ]αι παυλος
πλησθεις π̄νς αγιου και ατενισας εις [αυτον] 10 [ω] [πληρη]ς παντος δολου ειπεν
[κ]αι πασης ραδιουργιας υ[ιε] [διαβολου] [εχθρε] πασης δικαιοσυνης ου. παυση
διαστρεφων τα[ς] [οδους] [του] [κυ] [τας] [ευθει]ας 11 και νυν ιδου χειρ κῡ επι σε
και εση τυφλος μη [βλεπων] [τον] [ηλ]ιον αχρι καιρου παραχρημα τε
[ε]πε[πεσεν] επ [αυτον] [αχλυσ] [και] [σκο]τος και περιαγων εξητ[ε]ι
χει[ρα]γω[γους] 12 [τοτε] [ιδων] [ο] [ανθυπατος] [το] [γ]εγονως επιστευσεν
εκπ[λ]ησ[σο]μεν[ος] [επι] [τηι] [διδαχη] [του] [κυ] 13 [αν]αχθεντε απο της παφου
ο[ι] [πε]ρι π[α]υλον [ηλθον] [εις] [περγην] [της] [παμφ]υλιας ιωαννης δε
αποχ[ω]ρησα[ς] απ [αυτων] [υπεστρεψεν] [εις] [ιεροσο]λυ[μ]α 14 ουτοι δε
διελθοντ[ε]ς α[πο] [της] [περγης] [παρεγενοντο] [εις] [αντιο]χειαν την πεισιδι[αν]
[και] [ε]λ[θοντ]ε[ς] [εις] [την] [σ]υ[ναγωγην] [τηι] [ημερα] [των] σαββ[ατων]
[εκαθισαν] 15 [μετα] [δε] [την] [αναγνωσιν] [του] [νομου] [και] των προφη[των]
[απεστειλαν] [οι] [αρχισυναγωγοι] [προς] [αυτους] [λεγ]οντες ανδρ[ε]ς [αδελφοι]
[ει] [τις] [εστιν] [εν] [υμιν] [λογος] [παρακλησεως] [πρ]ος τον [λαον] [λεγετε]

(Деяния 13:16-33)

16 [αναστας] [δε] [παυλος] [και] [κατασεισας] – 25 – [τον] [δρομον] : ελ[ε]γεν τινα
με [υ]πνοοειτε ειναι ου[κ] [ειμι] [εγω] [αλλ] [ιδου] [ερχεται] [μ]ετ εμε ου αξιος
ουκ ειμι εγω το υποδη[μα] [των] [ποδων] [λυσαι] 26 [αν]δρες αδελφοι υιοι γενους

·αβρααμ οι εν υμε[ιν] [φοβουμενοι] [τον] [θ]̄ν υμιν ο λογος της σωτηριας ταυτης απεσταλ[η] 27 [οι] [γαρ] [κατοικουντε]ς ιερουσαλημ και οι αρχοντες αυτων τουτον αγ[νοησαντες] [και] τας φωνας των προφητων τας κατα σαββατον [αναγεινωσκομ]ενας κρειναντες επληρωσαν 28 και μηδεμι[αν] [αιτιαν] [θανατου] [ευρο]γτες ητησαντο [π]ειλατον αναيرهθηναι [αυτον] 29 [ως] [δε] [ετελεσαν] [παντα] τα πε[ρι] αυτου γεγραμμενα κα[θελοντες] [απο] [του] [ξυλου] [ε]θηκαν εις μνημειον 30 ο δε θ̄ς [ηγειρεν] [αυτον] [εκ] [νεκρων] 31 [ος] [ωφθη] [επι] [ημε]ρα[ς] [π]λειους τοις συναναβ[ασιν] [αυτωι] [απο] [της] [γαλιλαιας] [εις] [ιερ]ουσ[αλ]ημ οιτινες νυν εισι μα[ρτυρες] [αυτου] [προς] [τον] [λαον] 32 [και] [ημεις] υμ[ας] ευαγγελιζομεθα την πρ[ος] [τους] [πρ]ας [επαγγελιαν] [γενομενην] 33 [ο]τι ταυτην ο θ̄ς εκπεπλ[ηρωκεν] [τοις] [τεκνοις] [αυτων] [ημιν] [αναστησα]ς η̄ως και εν τοις ψαλμ[οις] [γεγραπται] [υιος] [μου] [ει] [συ] [εγω] [σημερ]ον γεγεννηκα σε

(Деяния 13:34-52)

34 οτι δε [ανεστησεν] [αυτον] [εκ] [νεκρων] [μηκετι] [μελλοντα] [υποστρ]εφειν εις δι[αφθοραν] [ουτως] [ειρηκεν] [οτι] [δωσω] [υμιν] [τα] [οσια] [δαυιδ] [τα] [πισ]τα 35 διο[τι] [και] [εν] [ετερωι] [λεγει] [ου] [δωσεις] [τον] [οσιον] [σου] [ιδειν] [διαφθορ]αν 36 δα[υιδ] [μεν] [γαρ] [ιδια] [γενεα] [υπηρετησας] [τηι] [του] [θυ] [βουληι] [εκο]ιμη[θη] [και] [προσετεθη] – 46 –

[λαληθ]ηναι τον λογον του θῡ επει δε απωθεισθ[ε] [αυτον] [και] [ουκ] [αξιους] κρειντε αυτους της αιωνιας ζωης ιδου στρεφ[ομεθα] [εις] [τα] [εθνη] 47 ουτως γαρ εντεταλται ημιν ο κ̄ς τεθεικα σε ει[ς] [φως] [εθνων] [του] ειναι εις σωτηριαν εως εσχατου της γης 48 ακο[υοντα] [δε] [τα] [εθνη] [εδο]ξαζον τον λογον του ·κῡ και επιστευσαν οσοι [ησαν] [τεταγμενοι] [εις] ζωνην αιωνιον 49 διεφερετο δε ο λογος δι ολη[ς] [της] [χωρας] 50 [οι] [δε] [ι]ουδαιοι παρωτρυναν τας σεβομενας γυναικα[ς] [τας] [ευσημον]ας και τους πρωτους της πολεως και επηγειρα[ν] [διωγμον] [επι] [το]ν παυλον και βαρναβαν και εξεβαλον αυτ[ους] [απο] [των] [οριων] 51 [οι] [δε] [ε]κτιναξαμενοι τον κρινορτον των ποδ[ων] [επ] [αυτους] [ηλθον] εις ·ικονιον 52 οι γε μαθηται επληρουντο χαρ[ας] [και] [πν̄ς] [αγιου]

(Деяния 14:1-19)

1 [εγεν]ετο δε εν ικονιωι κατ[α] το αυτο εισελθειν [αυτους] [εις] [την] [συ]ναγωγην των ιουδαιων και λαλησαι ουτως [ωστε] [πιστευσαι] [ιουδ]αιων τε και ελληνων πολυ [πλη]θος 2 οι δε απ[ειθησαντες] [ιουδαιοι] επηγειραν και εκακ[ωσα]ν [τ]ας [ψ]υχ[ας] [των] [εθνων] [κατα] [αδελφων] 3 [ικανον] μεν ουν

χρονον διε[τριψαν] [παρρησιαζομενοι] [επι] [τωι] [κω̄] [τωι] μαρτυρ[ο]υ[ντι] [επι]
[τωι] [λογωι] [της] [χαριτος] [αυτου] [διδοντι] [σημει]α και τερ[ατα] [γινεσθαι]
[δια] [των] [χειρων] [αυτων] 4 [εσχισθη] [δε] [το] [πληθος] [της] [πολεως] [και]
[οι] [μεν] [ησαν] [συν] [τοις] [ιουδαιοις] [οι] [δε] [συν] [τοις] απ[ο]σ[τολ]οις 5
[ως] [δε] [εγενετο] [ορμη] [των] [εθνων] [τε] [και] – 15 –

[λεγοντε]ς ανδρες τι ταυτα ποιειτε ομοιοπαθεις εσμ[εν] [υμιν] [ανθρωποι]
ευαγγελιζομενοι υμας αποστηναι απο τουτ[ων] [των] [ματαιων] [κ]αι επιστρεφειν
επι τον θ̄ν τον ζωντα ος εποιη[σεν] [τον] [ουρανο]ν και την γην και την θαλασσαν
και παντα τα [εν] [αυτοις] 16 [ος] [εν] [ταις] παρωχημεναις ειασεν παντα τα εθνη
[πορευεσθαι] [ταις] οδοις αυτων 17 καιγε ουκ αμαρτυρον αυτον αφη[κεν]
[αγαθουργ]ων ουρανοθεν υμιν υετους διδους και καιρου[ς] [καρποφορους]
[ε]μπιμπλων τροφης και ευφροσυνης τας καρδ[ιας] [υμων] 18 [και] [ταυ]τα
λεγοντες μολις κατεπαυσαν τους οχλους τ[ου] [μη] [θυειν] [αυτοις] 19 απηλθον δε
απο αντιοχειας ιουδαιοι και ι[κονιου] [και] [πεισαντ]ες τους οχλους και λισαντες
τον παυλον εσυ[ρον] [εξω] [της] πολεως νομιζοντες αυτον τεθνηκεναι

(Деяния 14:20-23)

20 κ[υκλωσαντων] [δε] [τ]ων μαθητων αυτου αυτον αναστας εισηλ[θεν] [εις] [την]
[πολιν] [κ]αι τη επαυριον εξη[λθεν] συν τωι βαρναβα [εις] [δερβην] 21
[ευαγγελισα]μενοι τε [την] [πολι]ν εκεινην κα[ι] μαθη[τευσαντες] [ικανους]
[υπεστρεψαν] [εις] [την] [λυστρα]ν και ικони[ον] [και] [αντιοχειαν] 22
[επιστηριζοντες] [τας] [ψυχας] [των] [μ]αθητων [παρακαλουντες] [εμμενειν] [τηι]
[πιστει] [και] [οτι] [δια] [πολλω]ν θλειψ[εων] [δει] [ημας] [εισελθειν] [εις] [την]
[βασιλειαν] [του] [θῡ] 23 [χειρ]οτο[νησαντες] [δε] [αυτοις] –

(Деяния 15:2-19)

2 – [ζητηματο]ς ·τουτου 3 οι μεν ουν προπεμφθεντε[ς] [υπο] [της] [εκκλησιας]
[διηρχον]το την τε φοινεικην και σαμαρεια[ν] [ε]κδιη[γουμενοι] [την]
[επιστρο]φην των ·εθνων και εποιουν χαραν μεγαλ[ην] [πασιν] [τοις] [αδελφο]ις 4
παραγενομενοι δε εις ιεροσολυμα παρ[εδεχθησαν] [απο] [της] [εκ]κλησιας και των
αποστολων και των πρ[εσβυτερων] [απαγγει]λαντες οσα εποιησεν ο θς̄ μετ
·αυτ[ω]ν 5 εξα[νεστησαν] [δε] [τιν]ες απο της αιρεσεως των φαρισα[ι]ων
π[επιστευκοτες] [λεγοντ]ες οτι δει περιτεμνειν ·αυτους πα[ρ]αγγ[ελλειν] [τε]
[τηρειν] [τον] [νο]μον ·μωσεως 6 συνηχθησαν τε οι απ[ο]στολ[οι] [και] [οι]
[πρεσβυτεροι] [ιδ]ειν περι του λογου ·τουτου 7 π[ο]λλης δ[ε] ζητ[ησεως]
[γενομενης] [ουκ] [ολι]γης τωι παυλω και τωι βαρναβα [πρ]ος αυ[τους] [εταξαν]
[αναβα]ινειν παυλον και [β]α[ρ]να[β]αν κα[ι] [τι]νας [αλλους] [εξ] [αυτων]
[πρ]ο[ς] [το]υς [απ]οστολους [κ]αι [πρ]εσβ[υτερ]ου[ς] γεν[ομενης] [αναστας]

[πετρος] [ειπ]ε προς αυτ[ους] [ανδρ]ες αδ[ελ]φοι.υ[μεις] [επιστασθε] [οτι] [αφ] [ημερων] [α]ρχαιω[ν] [εν] [υμιν] [εξελ]ε[ξ]ατο [ο] [θς̄] [δια] [του] [στοματος] [μου] [ακουσαι] [τα] [εθνη] [τον] [λογον] [του] [ευαγγελιου] και πιστευσαι 8 [και] [ο] [καρδιογνωστης] [θς̄] εμα[ρτυρησεν] [αυτοις] [δο]υς τ[ο] [πν̄α] [το] [αγιον] [καθως] [και] [ημιν] 9 [κ]α[ι] [ουθεν] [διεκρινεν] [μεταξυ] [ημων] [τε] [και] [αυτων] [τη] [πιστει] [καθα]ρι[σας] [τας] [καρδιας] [αυτων] 10 [νυν] [ουν] [τι] [πειραζετε] – 19 –

[κρινω] [μη] παρενοχλειν τοις απο.των εθνων επιστρε[φουσιν] [επι] [τον] [θν̄]

(Деяния 15:20-39)

20 [α]λλ̄ επιστειλαι αυτοις του απεχεσθαι των αλι[σγηματων] [των] ·[ειδω]λων και του ·πνεικτου και του αιματος 21 μωση[ς] [γαρ] [εκ] [γενεων] [αρχαιων] τους κηρυσσοντας αυτον εκει εν ταις [συναγωγαις] [κατα] [π]αν σαββατον ·αναγεινωσκομενος 22 τοτε.ε[δοξεν] [τοις] [αποστολοις] και τοις πρεσβυτεροις συν οληι τη [εκκλησια] [εκλεξαμε]νους ανδρας εξ αυτων πεμψαι εις [αντιοχειαν] [συν] [τω] [παυλ]ωι και ·βαρναβα ιουδαν τον καλουμ[ενον] [βαρσαββαν] [και] σιλαν ανδρας ηγουμενους εν τοις αδελφ[οις] 23 [γραψαντες] [δια] [χειρο]ς αυτων οι αποστολοι και πρεσβυτ[εροι] [αδελφοι] [τοις] [κατα] [την] αντιοχειαν κ[αι] την συριαν και κι[λικιαν] [αδελφοις] [τ]οις εξ [ε]θνων [χαι]ρειν 24 επειδη ηκουσαμεν [οτι] [τινες] [εξ] [ημων] [εξελθοντες] εταρ[αξαν] [υμας] [λογο]ις ανασκευαζοντ[ες] [τας] [ψυχας] [υμων] [οις] [ου] [διεστειλαμε]θα 25 εδοξεν ημιν γ[ενομενοις] [ομοθυμαδον] [εκλεξαμε]νους ανδρας πεμψα[ι] [προς] [υμας] [συν] [τοις] [αγαπητοις] [ημων] [βαρνα]βα και παυλωι 26 ανθρ[ωποις] [παραδεδωκοσι] [τας] [ψυχας] [αυτων] [υπερ] [του] [ονοματος] [του] [κῡ] [ημων] [ιη̄] [χρ̄] 27 [απεσταλκαμεν] [ουν] [ιουδαν] [και] σιλαν και α[υτους] [δια] [λογου] – 38 –

[αποσταντα] [απ] [αυτων] απο παμφυλιας και μη συνελθ[ο]ντα [αυτοις] [εις] [το] [εργον] [μη] [συμπαρ]αλαμβανειν 39 εγενετο δε παροξυσμο[ς] [ωστε] [αποχωρισθηναι] [αυτο]υς απ αλληλων τον τε βαρναβαν παρα[λαβοντα] [τον] [μαρκον] εκπλευσαι εις κυπρον

(Деяния 15:40-41)

40 παυλος δε επιε[ξαμενος] [σιλαν] [εξ]ηλθεν παραδοθεις τη χαριτι του θῡ υπ[ο] [των] [αδελφων] 41 [διηρ]κετο δε δια της συριας και της κιλικιας ε[πιστηριζων] [τας] ·[εκκ]λησιας

(Деяния 16:1-20)

1 κατηντησεν δε και εις δερβην κ[αι] [εις] [λυστραν] [και] [ιδου] μαθητης τις ην εκει τιμοθεος υιος γυ[ναικος] [ιουδαιας] [πιστ]ης πς̄ δε ελληνος 2 ος εμαρτυρειτο υπο [των] [εν] [λυστροις] [και] [ι]κονιω αδελφων 3 τουτον ηθελησεν ο παυ[λος] [συν] [αυτωι] ·[εξελ]θειν και ελαβεν και περιτεμων αυτον δ[ια] [τους] [ιουδαιους] [τους] οντας εν τοις τοποις εκεινο[ις] ηδεισ[αν] [γαρ] [απαντες] [τον] [πρ̄α] [αυτου] [ο]τι ελλην ·υπηρχεν 4 ως δ[ε] [δι]επορ[ευοντο] [τας] [πολεις] [παρεδιδο]σαν αυτοις φυλ[α]σσει[ν] [τα] [δογματα] [τα] [κεκριμενα] [υπο] [των] [αποσ]τολων [και] [πρεσβυτερων] [των] [εν] [ιεροσολυμοις] 15 –

[οικος] [αυτης] παρεκαλεσεν λεγουσα ει κεκρικατε μ[ε] [πιστην] [τωι] [κω̄] [ειναι] [εις]ελθοντες εις τον οικον μου ·μενετε κ[α]ι [παρεβιασατο] [ημας] 16 [εγ]νετο δε πορευομενων ημων εις την π[ρο]σευχην [παιδισκ]ην τινα εχουσαν π̄να ·πυθωνος υπαντησα[ι] [ημιν] [ητις] [εργασιαν] πολλην παρειχεν τοις κυριοις αυτης μαγ[τευομενη] 17 [αυτη] [κ]ατακολουθουσαν τωι παυλω και ημιν εκραζ[εν] [λεγουσα] [ουτοι] [οι] [α]νθρωποι του θ̄ου του υψιστου εισιν οιτινες κα[τα]γγελλουσιν [υμιν] οδον σωτηριας 18 τουτο δε εποιει επι πολλας η[μερας] [διαπονηθει]ς δε παυλος επιστρεψας τωι π̄νι ειπεν παρ[αγγελλω] [σοι] [εν] [ονο]ματι ιη̄ χρ̄ εξελθειν απ̄ αυτης και αυτης τη[ς] [ωρας] [εξηλθεν] 19 [ιδο]ντες δε οι κυριοι αυτης οτι εξηλθεν η ελπ[ις] [της] [εργασιας] [αυ]των επιλαβ[ο]μενοι τον παυλον και τον σε[ιλαν] [ειλκυσαν] [εις] την αγο[ραν] επι τους ·αρχοντας 20 και προσ[αγαγοντες] [αυτους] [τοις] [στρατηγοις] [ειπα]ν ουτ[οι] οι ανθρωποι εκτα[ρασσουσιν] [ημων] [την] [πολιν] [ιουδαιοι] [υπαρχοντ]ες

(Деяния 16:21-39)

21 κα[ι] κα[τ]αγγελλουσιν [εθη] [α] [ουκ] [εξεστιν] [ημιν] [παραδεχεσθαι] [ουδε] [ποιειν] [ρωμαιοις] [ουσιν] 22 [και] [συν]επ[εστη] [ο] [οχλος] [κατ] [αυτων] και [οι] [στρατηγοι] [περιρηξαντες] – 32 –

[αυτωι] [τον] [λο]γον τ[ο]υ κ̄ου συμ̄ πασι τοις εν τη οικια αυτου 33 κ[αι] [παραλαβων] [αυτους] [εν] [ε]κεινη τη ωρα της νυκτος ελ[ο]υσεν απο τ[ων] [πληγων] [και] [εβα]πτισθη και αυτος και ο οικος αυτου ολος παραχρ[ημα] 34 [αναγαγων] [τε] [α]υτους εις τον οικον παρεθηκεν τραπεζαν κ[αι] [ηγαλλιασατο] [παν]οικει πεπιστευκως τωι θ̄ω 35 ημερας δε γεν[ομενης] [απεστε]ιλαν οι στρατηγοι τους αβδουχους λεγοντες απ[ο]λυσον [τους] [αν]θρωπους εκεινους 36 απηγγειλεν δε ο δεσμ[οφυλαξ] [τους] [λογο]υς προς τον παυλον οτι απεσταλκαν οι στρατη[γοι] [ινα] [απολυθ]ητε νυν ουν εξελθοντες πορευεσθε εν [ειρηνηι] 37 [ο] [δε] [παυ]λος εφη προς αυτους δειραντες ημας δημοσια [ακατακριτ]ους υπαρχοντας ρωμαιοις ανθρωπους εβα[λαν] [εις] [φυλακην] και νυν λαθρα ημας

εκβαλ[λ]ουσιν. ου γαρ [αλλα] [ελθοντες] [αυτοι] [η]μας εξαγαγετωσαν 38
απηγγειλ[α]ν δε τοις στρα[τηγοις] [τα] [ρηματα] ταυτα τοις ραβδουχοι[ς]
εφοβ[ηθ]ησαν δε ακ[ουσαντες] [οτι] [ρωμα]ιοι εισιν 39 και ελθοντ[ες]
[παρεκα]λεσα[ν] [α]υτους [και] [εξαγαγοντες] [η]ρωτων εξελθειν [εκ] [της]
[πολεω]ς

(Деяния 16:40)

40 εξ[ελθ]ου[ν]τ[ες] [δε] [απο] [της] [φυλα]κης ειση[λθον] [προς] [την] [λυδια]ν και
[ιδοντες] [τους] [αδελφους] [π]αρεκα[λεσαν] [αυτους] [και] [εξηλθαν]

(Деяния 17:1-7)

1 [διοδευσαντες] [δε] – 9 [και] [λαβ]οντες το ικανον παρα του ιασονος και των
[λοιπων] [απελυσαν] [α]υτους 10 οι δε αδελφοι ευθεως δια νυκτος εξ[επεμψαν]
[τον] [τε] [π]αυλον και τον σειλαν εις βεροιαν οιτινες π[αρεγενοντο] [εις] την
συναγωγην των ιουδαιων 11 ουτοι δε η[σαν] [ευγενεστεροι] των εν θεσσαλονεικη
οιτινες εδεξαντο το[ν] [λογον] [μετα] [π]ασης προθυμιας καθ ημεραν
ανακρεινοντ[ες] [τας] [γραφας] ει ταυτα ουτως εχοι 12 πολλοι μεν ουν
επιστε[υσαν] [εξ] [αυτων] [κ]αι των ελληνιδων γυναικων και των ευσχ[ημωνων]
[και] [αν]δρων ουχ ολιγοι 13 ως δε εγνωσαν οι απο της θεσ[σαλονεικης] [ιουδ]αιοι
οτι και [ε]ν τη βεροια κατηγγελη υπο του [παυλου] [ο] [λογος] [του] θυ̅ηλθαν
κακει σαλευοντες τους οχλους 14 [ευθεως] [δε] [τοτε] [τον] παυλον εξαπεστειλαν
οι αδελφοι πορευε[σθαι] [εως] [επι] [την] [θ]αλασσαν υ[πε]μειναν τε ο τε σειλας
και ο τιμοθεος [εκει] 15 [οι] [δε] καταστανον[τ]ες τον παυλον ηγαγον εως
αθ[ηνων] [και] [λαβοντε]ς εντολην π[ρος] τον σειλαν και τον τιμοθεο[ν] [ινα] [ως]
[ταχιστα] [ελ]θωσιν προς αυ[τον] · [εξη]εσαν 16 εν ταις αθηναι[ς] [εκδεχομενου]
[αυ]του[ς] [του] παυ[λου] [παρωξυνε]τ[ο] το π̅να αυτου εν [αυτωι] [θεωρουντος]
[κατειδωλον] [ουσαν] [την] [πολιν] 17 [διελ]εγετο μεν ουν ε[ν] [τηι] [συναγωγηι]
[τοις] [ιουδαιοις] [και] [τοις] [σεβομενο]ις και εν [τ]η[ι] [αγορα] –